卐 ॐ ह्रीँ अर्हं नमः 卐

॥ श्री नेमि-लावण्य-दक्ष-सुशीलग्रन्थमाला रत्न ५०वां ॥

शासनसम्राट्-परम पूज्याचार्य महाराजाधिराज श्रीमद्विजय-नेमिसूरीश्वरजी म० सा० के पट्टालङ्कार-साहित्यसम्राट्-परमपूज्याचार्यप्रवर श्रीमद्विजयलावण्यसूरीश्वरजी म० सा० के पट्टधर-कविदिवाकर-परमपूज्याचार्यवर्य श्रीमद्विजयदक्षसूरीश्वरजी म सा. के पट्टधर जैन धर्मदिवाकर-परमपूज्याचार्यदेव श्रीमद्विजय-सुशीलसूरीश्वरजी म० सा० विरचित 'सुशीलनाममाला' ग्रन्थ की सम्मतियां।

卐 卐 卐

—: प्रकाशक :—

आचार्य श्रीसुशीलसूरि जैनज्ञानमन्दिर
शान्तिनगर-सिरोही [मारवाड] राजस्थान

द्रव्य सहायक—
पाली श्री जैन संघ
शेठ नवलचन्द सुमतचन्द
जैन देव की पेढी
गुजराती कटला, पाली [मारवाड] राजस्थान।

卐

श्री वीर सं० २५०५
विक्रम सं० २०३५
नेमि सं० ३०

卐

नकल १५००

卐

मुद्रक—
श्री प्रकाशमल भण्डारी
पेकर्स इन्डिया जालोरी गेट,
जोधपुर [मारवाड] राजस्थान।

प्रकाशकीय निवेदन

प्रात.स्मरणीय परम पूज्य कलिकाल सर्वज्ञ श्रीमद्-हेमचन्द्रसूरीश्वरजी म० सा० का विरचित 'श्रीअभिधान चिन्तामणि कोष' का आलंबन लेकर समर्थ विद्वान् पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद्-विजयसुशीलसूरीश्वरजी म० सा० ने विक्रम सं. २०२७ की साल मे राजस्थान के सुप्रसिद्ध पाली शहर मे चातुर्मास सपरिवार रह कर 'सुशीलनाममाला' नाम से समलङ्कृत एक सस्कृत नूतन कोष की २०४८ श्लोक मे पूर्णाहुति की थी। यह ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है, इसकी हमको अत्यत खुशी है। साथ मे इस ग्रन्थ पर अनेक पूज्य आचार्य महाराजादि मुनि महात्माओ की जैन-जैनेतर विद्वानो प्रोफेसरो की तथा वकील–डॉक्टर–शिक्षकादि सुज्ञजनो की सम्मतियो भी पृथग् पुस्तिका रूपे यह प्रकाशित करते हुए भी हमारे हर्ष मे अभिवृद्धि हुई है। सम्मतियां भेजने वाले सभी महानुभावो का तथा द्रव्य सहायक पाली संघ की शेठ नवलचन्द सुप्रतचन्द जैन देव की पेढी का हम सादर बहुमान पूर्वक आभार मानते है। धन्यवाद।

卐 卐 卐

जैनधर्म दिवाकर-शासनरत्न-तीर्थप्रभावक परमपूज्य आचार्यदेव श्रीमद्-विजयसुशीलसूरीश्वरजी म० सा०

आपश्री

शासनसम्राट्-सूरिचक्रचक्रवर्त्ति-तपोगच्छाधिपति परम पूज्य आचार्य महाराजाधिराज श्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वरजी म० सा० के सुविख्यात पट्टालङ्कार-साहित्यसम्राट्-व्याकरणवाचस्पति-शास्त्रविशारद-कविरत्न प० पू० आचार्यप्रवरश्रीमद्विजयलावण्यसूरीश्वरजी म० सा० के प्रधान पट्टधर-व्याकरणरत्न-शास्त्रविशारद-कविदिवाकर-देशनादक्ष प० पू० आचार्यवर्यश्रीमद्-विजयदक्षसूरीश्वरजी म० सा० के सहोदर पट्टधर हैं।

आपश्री का जन्म

वि० स० १९७३ की साल मे भाद्र शुद द्वादशी के दिन महागुजरात मे आये हुए सुप्रसिद्ध चाणस्मा गांव मे चौहाण गोत्र के वीशाश्रीमाली स्व० महेता चतुरभाई ताराचन्दजी की धर्मपत्नि स्व० चचलबाई की कुक्षी से हुआ था।

आपश्री की भागवती दीक्षा

पूर्वभव की आराधना, इस भव मे माता-पिता के द्वारा बाल्यवय मे पडे हुए सुसस्कार और सद्गुरु के सयोगादि के कारण से दस वर्ष की अवस्था मे चारित्र के पुनीत पन्थ मे प्रयाण करने की शुभ भावना प्रगट हुई थी।

वि० सं० १९८८ कार्तिक (मागशर) वद बीज के दिन १५ वर्ष की बालवय मे परमपूज्य प्रवर्तक मुनिप्रवर श्रीलावण्यविजयजी म० सा० के वरद्हस्ते मेवाड के पाटनगर उदयपुर मे पिताजी की सम्मति और विद्यमानता मे महामहोत्सव पूर्व हुई थी।

आपश्री की बडी दीक्षा

वि० सं० १९८८ महाशुद पाचम (वसन्त पञ्चमी) के दिन शासनसम्राट् प० पू० आ० श्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वरजी म० सा० के वरद्हस्ते, महागुजरात मे आया हुआ श्रीसेरीसा तीर्थ मे नूतन जिनमन्दिर मे प्राचीन मूलनायक श्रीसेरीसा पार्श्वनाथ प्रभु के प्रवेश प्रसंग पर चलता हुआ श्रीवृहद्नन्द्यावर्तपूजन युक्त महामहोत्सव मे हुई थी।

आपश्री को गणिपदवी

वि० स० २००७ कार्त्तिक (मगसर) वद छठ के दिन साहित्यसम्राट प० पू० आ० श्रीमद्विजयलावण्यसूरीश्वरजी म० सा० के वरद्हस्ते, सौराष्ट्र मे आया हुआ वेरावल बन्दरगाव मे आपश्री के गुरुवर्य पूज्य मुनिप्रवर श्री दक्षविजयजी म० सा० के साथ मे सोलह दिन के महामहोत्सव पूर्वक हुई थी।

आपश्री को पन्यास पदवी

वि० स० २००७ वैशाख शुद त्रीज (अक्षय तृतीया) के दिन स्व० शासनसम्राट् समुदाय के आठ पूज्यपाद आचार्य महाराजादि विशाल साधु समुदाय, साध्वी समुदाय और श्रावक श्राविकादि जैन-जैनेतर जनता के समक्ष, स्व समुदाय के १५ गणिवरो के साथ राजनगर-अहमदाबाद मे महामहोत्सव पूर्वक हुई थी।

आपश्री को उपाध्याय और आचार्य पदवी

वि० स० २०२१ महा शुद त्रीज के दिन उपाध्याय पदवी और पाचम (वसन्त पञ्चमी) के दिन आचार्य पदवी पूज्यपाद आचार्यप्रवर श्रीमद् विजयदक्षसूरीश्वरजी म० सा० वरद्हस्ते

राजस्थानान्तर्गत मरुधर देश मे आये हुए श्रीराणकपुरजी तीर्थ तथा श्री वरकाणाजी तीर्थ समीपवर्ती मुण्डारागांव में अभूतपूर्व शासन प्रभावना पूर्वक ६१ छोड के उद्यापनादि महामहोत्सव से युक्त हुई थी।

उसी प्रसंग पर आपश्री को आचार्य पदवी के साथ साथ 'शास्त्र विशारद' 'साहित्यरत्न' और 'कविभूषण' इन तीन पदों से भी समलङ्कृत किये थे।

आपश्री ने

जैन धर्म के विद्यमान ४५ आगम के योगोद्वहन विधिपूर्वक किये हैं। श्रीबीशस्थानक तप की और श्री नवपदजी महाराज की ओली की भी आराधना विधिपूर्वक की है। श्रीवर्द्धमानतप की ३६ मी ओली की आराधना हो गई है। तीर्थाधिराज श्रीसिद्धगिरीजी महातीर्थ की विधिपूर्वक ६६ यात्रा और चोवीहारा छट्ठ कर के दो दिन मे सात यात्रा भी कर ली है।

तदुपरान्त सूरिमन्त्र के पञ्चप्रस्थान की विधिपूर्वक पञ्चओली युक्त सम्यग् आराधना की है।

आपश्री का

प्रतिदिन १०८ वार सूरिमन्त्र का अखण्ड जाप अद्यावधि चालू है। नित्य आत्मरक्षा नवकार मन्त्र, सात स्मरण, जिनपञ्जरस्तोत्र, ग्रहशान्तिस्तोत्र, श्रीपार्श्वनाथ मन्त्राधिराजस्तोत्र, श्रीऋषिमण्डलस्तोत्र, श्रीतत्त्वार्थाधिगम सूत्र, शत्रुञ्जयलघुकल्प और श्रीगौतमाष्टक आदि का स्वाध्याय भी अद्यावधि चालू है।

आपश्री के वरद हस्ते

श्रीमूछाला महावीर तीर्थ में, श्री कापरडाजी तीर्थ मे, श्
जैसलमेर तीर्थ में, गुजरात के पाटण शहर में भी प्रतिष्ठा पर
शासन प्रभावनापूर्वक हुई है।

तदुपरांत जोधपुर, उदयपुर, पाली, सिरोही, सादडी, रा
स्टेशन, खीमेल, खुडाला, नांदणा, घणी, शिवगज, जावा
अनदोर, मनोरा, गूडा-वालोतान्, गुडा-एन्डला, लकडवा
गुडली, वडी-रपाहेली आदि क्षेत्रों मे भी परम शासन प्रभाव
पूर्वक प्रतिष्ठाएँ हुई हैं।

खीमेल मे और विलाडा मे, श्रीब्राह्मणवाडजी तीर्थ में श्
खोड गाव मे तथा रानीगांव में भी अञ्जनशलाका तथा प्रति
अनुपम शासन-प्रभावना पूर्वक हुई हैं।

आपश्री की शुभ निश्रा मे

१ खोड से पैदल सघ श्री कापरडाजीतीर्थ का और श्री राण
पुरजी की पञ्चतीर्थी का निकला है।

२. विजोवा से पैदल सघ श्रीराणकपुरजी पञ्चतीर्थी
निकला है।

३. खीमेल से पैदल संघ श्रीराणकपुरजी पञ्चतीर्थी ...
निकला है।

४ सिरोही से पैदल सघ श्री आबूजीतीर्थ का निकला है।

५ पाली मे पैदल सघ श्री कापरडाजीतीर्थ का निकला है।

६ पीपाड मे पैदल संघ श्री फलवृद्धिपार्श्वनाथजी तीर्थ का
निकला है।

७. केकड़ी ने पंदल सघ श्रीचँवलेश्वरजीतीर्थ का निकला है।
८. उदयपुर से पंदल सघ श्री केशरियाजीतीर्थ का निकला है।
९ सादडी से पंदल सघ श्रीकेशरियाजीतीर्थ का निकला है।
०. जोधपुर से पंदल सघ श्रीगांगाणीजीतीर्थ का निकला है।
१ उदयपुर से पंदल सघ श्रीराणकपुरजीतीर्थ का निकला है।

ापश्री को

श्रीजंसलमेर तीर्थ मे प्रतिष्ठा प्रसग पर श्रीसघ ने समारोह पूर्वक 'जैनधर्मदिवाकर' पद से विभूषित किया है।
(वि० सं० २०२७)

. रानी स्टेशन मे प्रतिष्ठा प्रसंग पर श्रीसंघ ने समारोह पूर्वक 'मरुधर देशोद्धारक' पद से समलकृत किया है।
(वि स० २०२८)

३ श्रीचँवलेश्वरतीर्थ में सघमाला प्रसङ्ग पर श्रीकेकड़ी सघ ने समारोहपूर्वक 'तीर्थप्रभावक' पद से विभूषित किया।
(वि० स० २०२९)

४. पाली शहर मे प्रतिष्ठा प्रसग पर श्रीसंघ ने समारोहपूर्वक 'राजस्थान दीपक' पद से समलंकृत किया है (वि. सं. २०३१)
५. जोधपुर नगर में प्रतिष्ठा प्रसंग पर श्रीसघ ने समारोह पूर्वक शासनरत्न' पद से विभूषित किया है (वि० सं० २०३१)

ापश्री के सदुपदेश से

(१) श्रीकापरड़ाजी तीर्थ मे 'समवसरण मन्दिर' का निर्माण हुआ।
(२) सोमेल मे 'श्रीपावापुरी मन्दिर' का निर्माण हुआ।
(३) जोधपुर में 'शाश्वतजिन समवसरणमन्दिर' का निर्माण हुआ।

(४) नाडोल में 'श्रीसिद्धचक्र मन्दिर', 'श्रीपावापुरी मन्दिर' का तथा लघुशान्ति के कर्ता श्रीमान-देवसूरिजी म० सा० का जीवन-चरित्र आरस के पट्ट मे तैयार हो रहा है।

(५) श्रीजैसलमेर पञ्चतीर्थी मे जिनमन्दिरो का जीर्णोद्धार का काम चल रहा है।

(६) जावाल मे 'श्रमण भगवान महावीर कीर्त्तिस्तम्भ' का कार्य शुरू कराया है।

(७) खिमाड़ा मे 'स्व० आ० श्रीमद्विजयलावण्यसूरीश्वरजी समाधिसद्गुरुमन्दिर' का काम हो गया है।

(८) यूरगाव मे जिनमन्दिर के पास श्रीसुशील जैन श्वेताम्बर धर्मशाला जिला-उदयपुर तैयार हुई है।

(९) सिरोही मे 'आचार्य श्रीसुशीलसूरि जैन ज्ञान मन्दिर' बन रहा है।

आपश्री का ग्रंथ सर्जनादि

सस्कृत मे–

तीर्थङ्कर चरित्र, षड्दर्शन दर्पण, सुशील नाममाला (सस्कृत शब्दकोश) छन्दोरत्नमाला, काव्यानुशासन टीका, शीलदूतवृत्ति, अर्हन अष्टोत्तरसहस्रनाम स्तोत्र, आत्मनिन्दा द्वात्रिंशिका टीका, श्रीरत्नाकर पञ्चविंशिका टीका इत्यादि हुए हैं।

गूर्जर भाषा मे–

श्रीहेमशब्दानुशासन सुधा, रत्ननीमाला, सम्यक् रत्न दीपक, प्रभु महावीर जीवन सौरभ, तीर्थयात्रा संबनी महत्ता, सुशील लेख सग्रह, सुशील साहित्य संग्रह इत्यादि हुए हैं।

[छोटे-बड़े १०८ ग्रंथों की रचना आपश्री ने की है, और अनेक ग्रन्थों का सम्पादन कार्य भी आपश्री के द्वारा हुआ है।]

आपश्री के संसारी पिताश्री और संयमावस्था के साधु, स्वर्गीय शासनसम्राट् प० पू० आचार्य महाराजाधिराज श्रीमद्-विजयनेमिसूरीश्वरजी म० के शिष्यरत्न सप्तमवयस्थाविर पूज्य मुनिराज श्रीचन्द्रप्रभविजयजी म० संयम की सुन्दर आराधना करके स्वर्ग सिधाये हैं।

आपश्री के संसारी ज्येष्ठ बन्धु और संयम अवस्था के गुरु स्वर्गीय साहित्य-सम्राट् प० पू आचार्यप्रवर श्रीमद्विजयलावण्य-सूरीश्वरजी म० सा० के प्रधान पट्टधर-व्याकरणरत्न-शास्त्र-विशारद-कविदिवाकर-देशनादक्ष-धर्मप्रभावक पूज्य आचार्यप्रवर श्रीमद्विजयदक्षसूरीश्वरजी म० सा० अनुपम शासन की प्रभावना कर रहे हैं।

आपश्री की-संसारी छोटी बहिन और संयम अवस्था की साध्वी, स्व० शासनसम्राट् समुदाय के आज्ञावर्त्तिनी परम-विदुषी स्व० पू० साध्वी श्रीप्रभाश्रीजी म० थी की शिष्या, बालब्रह्मचारिणी-विद्यानुरागिणी-संयमी पू० साध्वी श्रीरवीन्द्र-प्रभाश्रीजी-म० भी संयम की सुन्दर आराधना कर रही हैं।

आपश्री भी-बालब्रह्मचारी, ४६ वर्ष के निर्मल दीक्षा पर्याय वाले, व्याकरण-न्याय-साहित्य-छन्द-कोश-आगम-आदि अनेक शास्त्रों के ज्ञाता, प्रशान्त, सौजन्यमूर्ति, प्रतिभाशाली, सच्चारित्र शील, क्रियापात्र और ज्ञानध्यानादिक में सदा लीन रहते हैं।

दिनाङ्क
१७-६-१९७८

मनोजकुमार बाबुलालजी हरण
बी कॉम.
सिरोही (मारवाड़)

निषण्णा कमले भव्या,

अब्जहस्ता सरस्वति ।

सम्यग्ज्ञाप्रदाभूयात्,

भव्यानाभक्ति-शालिनाम् ।

" आचार्य श्रीविजयसुशीलसूरीश्वरजी ए रचेली 'सुशीलनाममाला' ना प्रारंभना बे फाग्म जोया। तेमनो आ प्रयत्न प्रशंसनीय छे।

तेमां ज आजे ज्यारे साधुओमां ग्रन्थ कर्तृत्व घटी रह्युं होवानुं कहेवामा आवे छे, तेवे अवसरे आ नाममाला एक जरुरियात पुरी पाडवा साथे पोतानु आगवुं गौरव स्थापित करे छे।

आ नाममालामा अनुष्टुप्छन्दमा घने तेटला वधु शब्दोनो संग्रह कराया छे, ए स्तुत्य छे अने ते कारणे आ नाममाला अभ्यासीवर्गने खूब उपयोगी बनशे।"

अमदावाद	विजयनन्दनसूरि
ता०	पांजरापोळ
६-२-७५	ज्ञानशाला

卐

कलिकाल सर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्रसूरीश्वरजी रचित "अभिधान चिन्तामणि" कोशना आधारे तमे रचेल नूतन संस्कृतश्लोकमा "सुशीलनाममाला" नूतन कोष हालना कालमा समाजने घणोज उपयोगी थशे, तेमा बे मत नथी।

दिनप्रतिदिन आवु नूतन सस्कृत साहित्य बहार पाडो के जेथी समाज ने खूबज उपयोगी थाय एज शुभेच्छा।

वेरावल (सोराष्ट्र)
आसो शुद १४ गुरुवार
ता० ७-१०-७६

विजयशांतिप्रभसूरि
जैनउपाश्रय
जगावाय चोक

卐

कलिकाल सर्वज्ञ भगवन्त आ० श्रीहेमचन्द्रसूरीश्वरजी विरचित "अभिधान चिन्तामणि" संस्कृतशब्दकोष तदनुसार २८८८ संस्कृतश्लोकप्रमाण "सुशीलनाममाला" ए शुभ नामथी सुशोभित शब्दकोष नूतन युगना अभ्यासीओ माटे उपकारी अने उपयोगी निवडशे.

तमारो प्रयत्न अतिनवल अने सफल कर्यो छे अने चिरंजीव बनवा निर्मायो छे. विद्वानोना करकमलमां जशे त्यारे आ ग्रन्थ अतीव आदरणीय बनशे.

आ योजना दीर्घदृष्टिथी कल्याण माटेनी छे आशा छे के वधु ने वधु तमारो (ग्रन्थकर्ता आ० श्रीविजयसुशीलसूरिजीनो) प्रयत्न स्व-पर श्रेयस्कर बनो.

मुंबई-56
A. S.
दिनाङ्क
१-१०-८६

ली०
आ० मेरुप्रभसूरि
जैन उपाश्रय
महात्मा गांधी रोड
वीलेपार्ला (पूर्व)

卐

॥ ॐ ह्रीँ अर्हं नमः ॥

"सुशीलनाममाला"-निर्माणकृते

शुभाशीराशिमाला-

मुनीन्द्रं तीर्थपं सार्वं, नौमि नेमिं जगद्गुरुम् ।
लावण्-शीलशाल्यङ्गं, दक्षमोदक्षमोत्तमम् ॥ १ ॥

"यथा नाम तथा गुणाः" इत्युक्तिमनुसृत्येयं नाममाला सुन्दरतरशीलालङ्कारालङ्कृतत्वाद्यथार्थाभिधानागुणनिधाना च ।

कलिकालकल्पतरुकल्प- कलिकालसर्वज्ञेन भगवता श्रीमद्धेमचन्द्राचार्यवर्येण विरचिता 'ऽभिधानचिन्तामणि' सदभिधानशब्दकोषयष्टिपरिपाटीपरिपुष्टत्वेन सुवर्णसुवासस्वलनसादृश्यं समजनिष्ट । दृग्गता पठ्यमाना चेयं 'सुशीलनाममाला', संस्कृतसाहित्योपासक-सर्वजनता-सार्वजनीनता जनयतु, विजयतु च जगतीतले समुद्र-भूप-सुधाकर-कमलाकर-धराधरादिमस्थिति यावद् ।

शास्त्रविशारद-कविभूषण-साहित्यरत्नाचार्यश्रीविजयसुशीलसूरिवरो मदीयसांसारिकोऽनुजोऽपि विनेयोऽपि सुशीलतालतालवानकल्पोऽनल्पायुष्मान् सम्भूय श्रीजिनेन्द्रशासनप्रभावनाभासुरकार्यकलापकरणोद्यतो भवत्वनुदिनमिति मे मङ्गलमनीषामहत्त्वशुभाशीराशिमालाऽसरात्ना ॥

२५०३ श्रीवीराब्दे, २०३३ विक्रमेऽब्दे, २८ श्रीनेमिवत्सरे, १३ लावण्यवर्षे, चैत्रशुक्लसप्तम्यां, रविवासरेऽलेखि विजयदक्षसूरिणा ॥

दिनाङ्कः — २७-३-७७ । मरुधरस्थे जावालनगरे शाश्वतीचैत्री-श्रीनवपदावलिमताराधना सा प्रथममङ्गलदिने चेति शुभं कल्याणमस्तु ॥

श्रीअभिधानचिन्तामणि कोषना आलंबने तमोए २८४८ संस्कृत श्लोकप्रमाण 'श्रीसुशीलनाममाला' नामनोशुभग्रन्थ रचेल छे, ते जाणी अनुमोदना। ते संस्कृत शब्दकोष सर्वने उपयोगी बने तेवी शुभेच्छा।

पालीताणा
तारीख
१२-१०-७६

विजय
जयानन्दसूरि
नेमि-दर्शनज्ञानशाला

卐 卐 卐

वन्दना पत्र मल्यो

"राजानी जेम विद्वानने कोषनी अभिवृद्धि आनन्द आपनारी थाय छे. कोषमां-अर्थबोधक मन्त्र जेटलुं विशेष होय तेटलुं तेनुं मूल्यांकन विशेष रहे छे. एवुं प्रस्तुतमां बधायुं हशे !"

आसो वदि ३
दिनाङ्क
१३-१०-७६

विजयधर्मधुरंधरसूरि
जैनउपाश्रय-पांजरापोळ
अमदावाद-३८०००१

卐 卐 卐

' सुशीलनाममाला ' अभिधानचिन्तामणि कोशनी जग्याए आपना हाथे वहार पडे छे एज विद्वानो शिष्यनी परंपरामा गौरव ने उन्नतमुखे प्रशसा करवा लायक छे बाकी वाचकवर्ग तेनो लाभ उठावी प्रशमा करे त्यारे ज ग्रन्यकर्त्तानी शोभा छे.

सूर्योदय यतो होय तो कोइने आगळी बतावबानी जरूरत रहेती नथी, तेनी मजा तो आख ज लू'टी शके छे. ए तो पुस्तकनो अभ्यास करी विद्यार्थीओ ज प्रशसा करी जाणे एज । राजा पण कोश विनानो राज्य करी शकतो नथी तेम पंडित पण कोशविनानो कवि बनी शकतो नथी एटलु लखी विरमु छु' ।

अमदावाद-१	प्रियंकरसूरि
दिनाङ्क	माण्डवीनी पोळ
१४-१०-७६	जैन उपाश्रय

'सस्कृत साहित्य सदर्भमां एक ग्रन्थरत्ननी वृद्धि थइ रही छे. ते जाणी परम सतोष.'

आसो वद ३	विजयचन्द्रोदयसूरि
सोमवार	तथा
ता० ६-१०-७६	पंन्यास अशोकचन्द्रविजयगणि
	जैननगर, जैनउपाश्रय
	पालडी, अमदावाद-७

卐 卐 卐

" व्याकरणना अभ्यासी जीवोने माटे कलिकाल सर्वज्ञ पू० आचार्य भगवन्त श्री हेमचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजे "श्री अभिधानचिन्तामणी" कोपनु सुंदर सर्जन कर्यु. तेनु आलंबन लइ सरलरीते समजी शकाय तेवी रीते केटलाक प्रकाशनो थया छे।

आ "सुशीलनाममाला" कोप पण अभ्यासमां घणो सारो सहकार आपे तेवो सुंदर ग्रथ छे

पू० आ० श्रीमद्विजयसुशीलसूरीश्वरजी म० श्री ए

आ ग्रन्थने तैयार करवामां घणी काळजी राखी छे. विद्वानोने तथा सस्कृतना अभ्यासी जीवो ने आ ग्रन्थ खरेखर उपयोगी थशे. ज्ञानभडारोए वसाववा जेवो छे।"

वींछीआ
तारीख
४-१०-७६

विजयनीतिप्रभसूरि
जैनउपाश्रय

卐 卐 卐

आपश्रीनी विद्वत्ता, साहित्य सेवा अने आत्मीयता अजोड छे तेनी हुं भूरि भूरि अनुमोदना करुं छुं अने इच्छुं छुं के आपश्रीए बनावेलो आ 'सुशीलनाममाला' नामनो ग्रंथ संस्कृतना जाणकार सर्वने उपयोगी थाय एवी शुभ भावना।

सिरोही
दिनांक
२२-१०-३६

उपाध्याय
चन्दनविजयगणि
श्रीहीरसूरीश्वरजी
जैनउपाश्रय

पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय कलिकाल सर्वज्ञ श्रीमद्‌हेमचन्द्र-सूरीश्वरजी महाराज विरचित 'श्री अभिधानचिंतामणी' कोशनुं आलंबन लइ, आपश्रीए २८४८ श्लोक प्रमाण 'श्रीसुशीलनाममाला' नामनो आ नूतन संस्कृत कोश बनाव्यो छे तेनी अंतःकरण पूर्वक हु भूरि भूरि अनुमोदना करुं छुं।

सिरोही
(राजस्थान)
दिनाङ्क
२२-१०-७६

आपनो
अन्तिषद्
उपाध्याय
विनोदविजयगणि
श्रीहीरसूरीश्वरजी
जैन उपाश्रय

विद्वद्वर्य प्रशांतमूर्त्ति परमपूज्य आचार्यदेव श्रीमद्विजय-सुशीलसूरीश्वरजी महाराज साहेब विरचित 'सुशील-नाममाला' शब्दकोश संस्कृतना अभ्यासीवर्गने उपयोगी थशे.

पूज्यपाद आचार्यदेवश्रीजीनी साहित्य अंगेनी सेवा घणीज अनुमोदनीय अने अभिनन्दनने पात्र छे.

दिनाङ्क
१५-१०-७६

पंन्यास
विकासविजयगणि
जैन न्याति नोहरा,
सादडी, मारवाड़

* मेरी मनोकामना *

व्याकरण, न्याय-साहित्य-काव्य-ज्योतिष-तर्क या चाहे किसी विषय को ले ले पर यदि उन विषयो को कोश का सहारा न मिले तो उस प्रत्येक विषय को समझने मे या उसके तात्पर्यार्थ को समझने मे कठिनता रहेगी। किसी भी विषय के लिए शब्द प्राप्त करने के लिए कोश के बिना चल नहीं सकता।

यदि व्याकरण शब्द को सिद्ध या उत्पन्न करता है तो कोश उसका सग्रह करता है। व्याकरणके सृजनको सुगठित करना कोश का कार्य है। व्याकरण यदि शब्द सपत्ति है तो कोश उसका निधान-खजाना या भंडार है।

संसार भरके ग्रन्य निर्माणो में कोश की अनिवार्य आवश्यकता हमेशा महसुस होती रही है, सदा होती ही रहेगी।

प्रत्येक भाषाकी सिद्धी के लिए ज्यो उस उस भाषा का व्याकरण आवश्यक होता है; त्यों प्रत्येक भाषाके लिए उसका समृद्ध शब्द भण्डार भी उतना ही आवश्यक है।

परम तारक, परमपूजनीय, सदास्मरणीय, सदाध्येय परमकृपालु श्री सर्वज्ञ भगवन्, सर्वाक्षरसन्निपाति पूज्य श्री गणधर भगवन् बीजबुद्धिधर अथवा श्रुतकेवली परमपुरुषों के

अनादा संसारके सभी को लिखने मे या बोलने मे शब्दों की अत्यंत आवश्यकता रहती है। यह जरूरी नहीं है कि प्रत्येक को लिखने या बोलने मे अपने भावो को व्यक्त करने के लिए माकूल शब्द मिल ही जाय।

मति या श्रुत ज्ञानावरणीय कर्मका क्षयोपशम जितना होगा उतनीही मति-बुद्धि या शब्द उपलब्ध होंगे। ऐसे समयमे अपने भावों को सुंदर शब्दो मे प्रस्तुत करने हेतु कोश एक सफल सुंदर वरदान सिद्ध होता है। पगु को ज्यों वैसाखी यष्टि चलने मे सहायक सिद्ध होती है, वैसे ही लिखने या बोलने वालो के लिए शब्द कोश।

ससारके समस्त भाषाओंकी जननी है-सस्कृत व प्राकृत भाषा।

आज तक सस्कृत या प्राकृत भाषा मे जितने साहित्यका सृजन हुआ, उतने सृजन का सौभाग्य शायद ही और किसी भाषाको मिला होगा।

सस्कृत व प्राकृत एक प्रकार से कभी पुरानी या वृद्ध न होने वाली सदा बहार एव गद्य प्रधान भाषा है।

गाभीर्य पूर्ण प्रचुर अर्थ को कम शब्दो मे संकलित करना हो तो वह केवल सस्कृत व प्राकृत मे हो संभव है।

यों कहना नितान्त सत्य है कि:- विशाल भावों को अल्प शब्दों मे व्यक्त करनेका एक मात्र भाषा माध्यम हो तो वह है-संस्कृत।

भारतीय सस्कृति की अस्मिता-प्रतिभा व ओजस्विता जितनी संस्कृत-प्राकृत भाषा में निखरती है शायद ही उतनी और किसी भाषा में निखरती हो।

इतिहास के कलेवर को प्राणवान् रखने वाली भाषा हो तो वह भी संस्कृत व प्राकृत है।

सस्कृत भाषाको देव भाषा कहते है इसे सभी सुज्ञ जानते ही हैं। परमपूजनीय पंचमांग श्री व्याख्या प्रज्ञप्ति-भगवतीजी सूत्रमे कहा है कि-देवलोकवासी देव मागधी (प्राकृत) भाषा में बोलते है-उनकी भाषाकी व्यवहार पद्धति है प्राकृत भाषा।

यों संस्कृत व प्राकृत भाषाएं युगारंभ से लेकर आज तक अपने महत्वको सम्हालती व सुदृढ करती आई है। युग चलेंगे तब तक यह भी चलेगी।

अतः समय २ के विद्वानोने हमेशा इस भाषामें लिखा व इस भाषा को सपन्न बनाया। समय २ के विद्वानोंने समय २ पर उत्पन्न होनेवाले शब्दों को भी समय २ पर उन शब्दो का संग्रह करके उन्हें अक्षय व अमर बनाया।

उपलब्ध संस्कृत प्राकृत साहित्य में सर्वतोमुखी प्रतिभा-वान, अपने समय के एकमात्र महानतम ज्ञानी श्री सिद्धराज जयसिंह एवं गुर्जरेश्वर परमार्हत श्रीकुमारपाल भूपाल-प्रतिबोधक अपने ज्ञानालोक से समग्र भारतको आलोकित करनेवाले कलिकाल सर्वज्ञ परमपूजनीय चरण सुगृहित नामधेय आचार्यप्रवर श्री हेमचन्द्रसूरीश्वरजी म० ने अपने जीवन में ३॥ करोड़ श्लोक प्रमाण नव्य संस्कृत-प्राकृत साहित्य का निर्माण किया। प्रस्तुत निर्माण में सभी विषयों का साहित्य है। ऐसा कोई विषय नहीं है कि जिसपर कलिकाल-सर्वज्ञ श्री की लेखिनी मुखर न हो उठी हो।

प्रत्येक विषयका कलिकाल सर्वज्ञ श्री का प्रदान अपूर्व एवं महत्वपूर्ण वरदान जैसा है। साथ २ प्रमुख-प्रतिष्ठित व आदर्श साहित्य भी है।

प्रत्येक विषय पर वेगवत्तीक द्रुतगति से चलनेवाली कलिकाल सर्वज्ञ श्री की लेखिनी ने भारत में तो क्या पर विश्वमें जैन साहित्य को आदरपूर्ण प्रमुख स्थान दिलवाया। विदेश के विद्या-विविध-विद्वानो-विज्ञ-विद्वान्-चिन्तक व प्रभावित होकर पूज्य श्री कलिकाल सर्वज्ञ श्री को भारत का ज्योतिर्भूत कहते हैं। और अपनी भावभरी श्रद्धाञ्जली पूज्य श्री के चरणों में प्रस्तुत करते हैं।

जंन साहित्य मे से कलिकाल सर्वज्ञ श्री के साहित्य को हटा दिया जाय तो ? ? ?

अनेक विषयो के प्रमाणभूत साहित्य के बिना जंन साहित्य पगु-निस्तेज जंसा बनेगा यह बात बिना किसी हिचकिचाहट माननी ही पड़ेगी।

३½ करोड श्लोक प्रमाण प्रामाणिक-प्रतिष्ठित आदर्श संस्कृत-प्राकृत के साहित्य का सृजन करके कलिकाल सर्वज्ञ श्री ने जो विक्रम (रेकोर्ड) प्रस्थापित किया है वह आज तक अटूट है। अभी तक ऐसा कोई विद्वान् या सर्जक ऐसा नहीं दिखा, नहीं सुना या नही कहीं वांचा कि जिसने अपनी जीवनी मे ३½ करोड श्लोक प्रमाण सस्कृत-प्राकृत भाषा मे नवसृजन किया हो।

पश्चात्‌वर्त्ति असख्य सृजक व लेखको ने अपनी रचना मे जगह २ कलिकाल सर्वज्ञ श्री सृजित साहित्य के पाठो को प्रामाणिक व प्रतिष्ठित एव सद्य, शीघ्र ग्राह्य मानकर उसके प्रमाण आदर व बहुमान पूर्वक दिये हे।

ऐसे असख्य गुण निधान पूज्य श्री कलिकाल सर्वज्ञ श्री विनिर्मित शब्दकोश है-अभिधान चिंतामणि। जो सरस-सरल-सुन्दर प्रौढ एव मातृ दुग्ध जंसा सुपाच्य है। जो साहित्य विश्व मे विख्यात है। आज तक उसके मूल व टीकाओ की लाखों प्रतिया छप चुकी है – और छप भी रही है। इतने परसे ही इस कोश की बहुबुधजन मान्यता का ध्यान आसानी से आ सकेगा।

इसी अभिधान चिंतामणि कोश के आधार को लेकर सर्वविदित पूजनीय चरण आचार्य श्रीमद् विजय सुशील सूरीश्वरजी म० द्वारा नव-निर्मित "सुशीलनाममाला" नामक कोश प्रगट हो रहा है। साहित्य समुद्रमें एक वेलाकी अभिवृद्धि हो रही है, यह इष्ट व आनन्द दायक है। प्रस्तुत कोश की रचना पद्धति अभिधान चिंतामणि के अनुसार ही रखी है। और उचित ही है। एक सामान्य नियम है कि- शिष्टों का पद चिन्हों का अनुसरण शिष्ट ही करते हैं।

२८४८ श्लोक प्रमाण का यह नव्य कोश जिज्ञासुओं के लिए सहायक सिद्ध होगा। वर्तमान समयके कुछ नव्य शब्दों को भी इस नव्यकोश मे सकलित किया है। और हां! यह आवश्यक भी है और सार्थक व उचित भी है कि नव्य रचनामें नवोदित शब्द सकलित हो जाय। नव्य रचना की यही तो खूबी है-कि प्राच्य का रक्षण व नव्य का संकलन हो एवं प्राच्य नव्य का संयोजन अवश्य हो।

इस प्रकार की प्रणालिका को लेकर प्राच्य अक्षुण्ण रहता है व जिससे नव्य शब्द देह पाकर अमरता की ओर अग्रसर होता है। इस प्रकार साहित्य समृद्ध होता रहता है।

नव्य कोश के बारे में अपनी २ रुचि के अनुसार विविध विचारकों के विविध विचार हो सकते हैं। और यह सुन्दर भी है। जैसे उपवन १ और कुसुम अनेक वैसे साहित्य एक और विविधरंगी विचार कुसुम अनेक! इसे अनुचित भी नहीं कह सकते।

पर एक बात तो निश्चित रूप से प्रत्येक समझदार व सामान्य बुद्धिवाला भी अवश्य मानेगा कि–सृजन के पीछे का सृजक का परिश्रम अवश्य ही सराहनीय–व अनुमोदनीय एव आदर्श है।

साथ २ अपन आशा भी करेंगे कि–सदायुवान-सदा-बहार सस्कृत व प्राकृत भाषा के साहित्य को प्रस्तुत कोशकार पूज्य आचार्य श्री नव्य स्वसृजन एव अनुपलब्ध व उपयोगी प्राच्य पुनः प्रकाशन द्वारा सस्कृत-प्राकृत के साहित्य मे अपना महत्वपूर्ण प्रदान करके देव भाषा साहित्य को समृद्ध करेंगे।

हम शासनदेव से प्रार्थना करेंगे कि–हमारी अपेक्षित साहित्य सृजन की आशा को नवपल्लवित व सफल करने हेतु कोशकार को बलप्रदान करें–सहयोग दें यह ही हमारी मनो कामना है।

वीर सं० २५०२, वि स०
२०३२ नेमि स० २७
कार्त्तिक कृष्णा ५
बुधवार दिनाक १३-१०-७६
श्री सभव जिन केवल ज्ञान
कल्याणक दिन

शासन सम्राट्-साहित्य सम्राट् परम पू॰
आ० श्री नेमिलावण्य चरण रज
मनोहर विजय गणि:
जैन उपाश्रय
श्री नाडुलाइ तीर्थ
[राजस्थान]

आपे अभिधान चिंतामणि उपरथी '<u>सुशीलनाममाला</u>' नूतन ग्रंथ तैयार कर्यो ते माटे घणी २ अनुमोदना खरेखर बालजीवोने व्याकरणना अभ्यासीओने सरल उपयोगी नीवडशे तेमां शक नथी.

आप विद्वद्वर्य छो ने व्याकरण तथा साहित्य आपना ज्ञानमां घूंटायेलुं छे.

प० पू० आचार्य गुरुदेवोना आशीर्वाद मेळवेला छे. आपनी कृतिने माटे हुं नानो शु लखु ।

खरेखर कलिकाल सर्वज्ञ श्रीमद्हेमचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजा जगत्प्रसिद्ध व्याकरणकार कहेवाया. तेओश्रीए रचेल विद्वद्भोग्य ए अभिधान चिंतामणि कोशनुं आलंबन लई आपे एक सुंदर संस्कृत कोश तैयार कर्यो ते बधुने बधु

लोकोने उपकारक थाय ते माटे एनुं आकर्षक प्रकाशन अने व्यवस्थित संपादन थाय तो प्राथमिक संस्कृत अभ्यासीओने खूबज उपयोगी नीवडशे।

आपे अनेकानेक ग्रन्थोनी रचना करीने जैन समाज ने अर्पण कर्या छे. शासनदेव आपने अधिकाधिक बल आपे ने वधु २ ग्रंथोनी रचना करो एवी हार्दिक शुभेच्छा।

मुम्बई–३
दिनांक
२१–१०–७६

प्रवर्तक
मुनिनिरंजनविजय
श्रीनमिनाथजी जैन उपाश्रय
३७९, भींडी बजार

卐 卐 卐

यत् किञ्चित्

'दरीदृश्यते च विकसित विश्वसिन विश्वविश्वतलये विश्वप्रतिष्ठित विशिष्ट शिष्ट गरिष्ठ शब्दकोषेष्वपि विद्वद्वर्य-परमपूज्याचार्यवर्य श्रीमद्विजयसुशीलसूरीश्वरैरस्य नूत्न प्रयत्नः किमर्थ स्वीकृत इति कल्पनया तद्धेतु विचारयता च मया निर्धार्यते मे मनसि यदय "श्रीसुशीलनाम्नमाला" भिधो नवीन कोष आधुनिकाल्पमतिजुषा मध्यापनाध्ययनादि शर्मकर्मव्यापृताना महोपकाराय कल्पतरति तु निर्विवादमेव।

विश्वविख्यात विद्वज्जनमान्याभिधानचिन्तामणि-अमरकोष-धनञ्जननाममालादिवदयमपि श्रीमदाचार्यवर्याणा मौलिक-प्रयासो विद्वज्जनगणचकोरवृन्दानि प्रीणयितु चन्द्रायमाणो चोभोतु इति सानन्द सोल्लास मादरञ्चाभिप्रेति वाचस्पति-विजयाभिधः कोऽपि वाचयम श्रीस्तभनपुरात्' इतिशम्।

त्रिगुणावकाशपादरदु स्भञ्जनसमाबाहुल बहुल-श्रीवीरविरतिवासर सौम्यवासरे।

खम्भात (गुजरात)
दिनाङ्क
६-२-७५

लि० वाचस्पतिविजयो मुनिः
[स्वर्गीय प० पू० आचार्य प्रवर श्रीमद्विजयनन्दन सूरीश्वराणा शिष्यः]

यह

'सुशीलनाममाला' ग्रन्थ के बारे में

सुप्रसिद्ध

अन्य समुदाय के

पूज्यपाद आचार्य महाराजादि

मुनिमहात्माओं की

सम्मतियें

卐 卐 卐

कलिकाल सर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्राचार्य विरचित श्रीअभिधानचिन्तामणि कोश के आधार पर जो यह 'सुशीलनाममाला' नाम की पुस्तिका छप चुकी है कर सदेश पढकर अत्याधक आनन्द का विषय हुआ है। कारण कि–साहित्य सशोधनादि कार्य मे कामयाव होगा, पण्डितो का कार्य सराहनीय होगा।

ग्रन्थकर्त्ता आचार्य श्रीमद्‌विजयसुशीलसूरीश्वरजी द्वारा ऐसे ही अनेकानेक ग्रन्थ प्रकाशित होवें यही कामना करते है। किमधिकम्.... .. ..

आउवा (राज०)
दिनाङ्क
७–१०–७६

विजयहिमाचलसूरि
जैन उपाश्रय

संस्कृत साहित्य में शब्द कोषों की परम्परा खूब ही पुरातनीय है। आचार्य पाणिनि ने संस्कृत साहित्य के प्रांगण में एक नया चमत्कार कोष के कलाप से प्रादुर्भूत किया। तत्पश्चात आचार्य केशव ने एवं अमरसिंह आदि विद्वानों ने सपूर्ण प्रयास कर कोषों के कलेवर विपुल बनाये। महा-वैयाकरण हलायुध ने, महाकवि धनञ्जय ने भी कोषो के निर्माण में महान प्रयास किया।

इस प्रकार जैनाचार्य भी कोष निर्माण में कृत हस्त सिद्ध हुए। जिन में कलिकाल सर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्राचार्यजी म० का स्थान विशेष श्रद्धेय है।

इस समय आचार्य श्रीमद्विजयसुशीलसूरिजी महाराज ने पूज्य श्रीहेमचन्द्राचार्यजी म० का अवलम्बन लेकर "सुशील-नाममाला" ग्रन्थ का निर्माण किया है यह अवश्य ही श्लाघनीय है।

कोष किसी की सम्पत्ति बन जाए यह तो बहुत कुछ कठिन सा है। हां—कोष से कोई वादि, वक्ता, कवि, भाषा शास्त्री का महान सुयोग्य गुणी बन जाए तो इष्ट सम्भावित है।

"सुशीलनाममाला" के कर्त्ता ने अवश्य ही कृतार्थ बनकर संस्कृत साहित्य की सेवा का समुचित लाभ उठाया है। भविष्य मे भी इसी प्रकार निरन्तर साहित्य की सेवा कर समाज, संस्कृति एवं सभ्यता के उत्थान मे अग्रेसर रहे, यही मेरी शुभेच्छा है।

विशेषावश्यक भाष्यकार लिखते है कि–
समग्र शास्त्र निर्जरा के लिए है, उस में अमंगल जैसा कुछ भी नहीं है।.........

सव्वं च णिज्जरत्थं सत्यमओऽमंगलमजुत्तं ॥ १६ ॥

होशियारपुर (पंजाब)
दिनाङ्क
१–१०–७६

द० विजयसमुद्रसूरि

यह ज्ञात कर अतीव प्रसन्नता हो रही है कि 'सुशील नाममाला' नामक कोष ग्रन्थ का प्रकाशन होने जा रहा है।

विविध पर्यायार्थक शब्दों का सुन्दर संकलन हेतु श्रीमद् विजय सुशीलसूरीश्वरजी महाराज का हम हार्दिक अभिनन्दन करते हैं और सामयिक प्रकाशन के लिये बधाई प्रेषित करते हैं। अत्यधिक लोकप्रिय बने यह ग्रन्थ यही शुभ कामना।

आसो वद ३
दिनाङ्क
६-१२-७६

विजयविद्याचन्द्रसूरि
मोहरा, (राज०)

[त्रयागच्छीय त्रिस्तुतिक मुख्य आचार्य महाराज सा० का यह अभिप्राय है]

॥ नँ अर्हं ऐँ नम ॥

" सुशीलनाममाला "

भाषाव्यवहार माटे पहेली जरुरीयात शब्दज्ञाननी छे शब्दज्ञाननो खजानो कोषग्रंथोमां सकलित छे समर्थ विद्वानने पण जो कोषग्रंथोनुं अध्ययन सुचारुरुपे न होय तो प्रसगे अखावुं पडे छे. सर्व विद्याओनो प्रकाश पण कोष ग्रथोनी मदद विना क्यांय पहोची शकतो नथी.

वर्त्तमानमा उपलब्ध कोष ग्रंथोनी श्रेणिमां एक नवीन प्रकाश किरणरुप, स्वनाम धन्य "सुशीलनाममाला" कोष ग्रन्थ परम विद्वद्वर्य आचार्य श्रीविजयसुशीलसूरीश्वरजी महाराजे रचेल प्रकाशित थइ रह्यो छे तेनी भूरि अनुमोदना.

कर्त्ताए अनोखी शैलीथी लगभग प्रचलित सर्व शब्दोनो सग्रह आ ग्रथमां सुन्दर अने व्यवस्थितपणे कर्यो छे.

आ सम्कृत कोष ग्रन्थ विद्वान् पुरुषो अने संस्कृत अभ्यासीओ माटे महान् उपकारक बनी रहे एज शुभ अभिलाषा।

पुना सिटी
दिनाङ्क
२७-१०-७६

लि०
विजयप्रेमसूरि
विजयसुबोधसूरि
विजयलब्धिसूरि

[ए त्रणे आ० म० स्व० प० पू० आ० श्रीमद्विजयभक्तिसूरीश्वरजी म० सा० ना समुदायना छे.]

(पू० आ० श्रीविजयभद्रंकरसूरीश्वरजी महाराज नो पत्र)

शमदमादिगुणभूषित प्रवचन प्रभावक चरणकरणगुण गणाकर आचार्य महाराज श्रीसुशीलसूरिजी महाराज आदि जोग

भद्रंकरनी वन्दना पूज्योनी कृपाए सुख शाता छे. आपनो पत्र अने 'सुशीलनाममाला' ना छापेला फोरम मल्या.

'प्रथम दृष्टिये जोतां आ ग्रन्थ गत विषयोना विभाग वगेरे करवामां एक सुंदर स्वाध्यायरूप प्रयत्न थयो छे.

भादरवा सु० १२ शनिवार	भद्रंकरविजय
दिनांक	पगथ गोलवाडो
२४-९-७७	जैन उपाश्रय
	अमदावाद-१

[जेओ श्री-स्वर्गीय संघ स्थविर प० पू० आ० श्रीमद्विजय-सिद्धिसूरीश्वरजी महाराज साहेबना समुदायना प० पू० आ० श्रीमद्विजयभद्रंकरसूरीश्वरजी म० सा० छे]

तमे 'सुशीलनाममाला' ना फरमा मोकल्या, ते जोया।
तमारुं कार्य विद्वता भरेलुं छे ते अनुमोदनीय छे।

ठेकाणुं सांडेराव जिनेन्द्र भवन पालीताणा मागसर शुद-१३ दिनाङ्क ४-१२-७६	आचार्यविजय मंगलप्रभसूरि तथा आचार्यविजय अरिहंत-सिद्धसूरि

[जे श्री श्री तीर्थोद्धारक स्व० प० पू० आ० श्रीमद्विजयनीति सूरीश्वरजी म० सा० ना समुदायना छे.]

अभिप्राय-

"श्रीसुशीलनाममाला" कोश श्लोकबद्ध प्राचीन संस्कृत नाम कोशोमा एक सुन्दर उमेरो छे अलबत् श्लोक संख्या काइक मोटी छे, छता एमा शब्दोमा लिंगनो समावेश होवाथी लिंगज्ञान श्लोकनी साथे साथे ज थइ जाय छे तेथी कुल श्लोक संख्या वधे ए सहज छे

श्लोक रचना सरल होवाथी तेम ज मुख्य शब्दना शीर्षक होवाथी भणनार ने सरलता रहेशे. साथे अकारादि क्रमथी शब्दोनु परिशिष्ट होवाथी शब्दनो अर्थ जाणवा इच्छुकने पण सारी सरलता थइ छे

अमलनेर
वीर सं० २०३३ } विजयभुवनभानुसूरि
मा० सु० ६

[जेओश्री-स्व० प० पू० आ० श्रीमद्विजयप्रेमसूरीश्वरजी म० सा० ना पट्टालङ्कार छे]

कोइ पण भाषाना क्षेत्रमां प्रगति साधवा माटे ते भाषाना शब्दकोशनुं ज्ञान मेळववुं जरुरी छे

संस्कृत साहित्य क्षेत्रे नाना-मोटा अनेक संस्कृत शब्द-कोशोनी रचना थयेली छे. तेमां 'कलिकाल सर्वज्ञ' बिरुद धारक सिद्ध-सारस्वत श्रीहेमचन्द्राचार्य कृत "अभिधान चिन्तामणि कोश" अनेरी भात पाडे छे.

जैन साहित्यना अभ्यासक-वाचक वर्गने बीजा बधा शब्दकोशो करता "अभिधान कोश" वधु उपयोगी अने उपकारी छे

पूज्य आचार्यदेव श्रीसुशीलसूरीश्वरजी महाराज संस्कृत भाषाना उंडा अभ्यासी छे 'सिद्धहेमव्याकरण' संबंधी विपुल साहित्यनुं तेओश्रीए अध्ययन-मनन कर्युं छे, अने संस्कृत-गुजराती भाषामां अनेक पुस्तको लखी सारी एवी साहित्य-सेवा बजावी छे

प्रस्तुत "सुशीलनाम माला" ग्रन्थ पण तेओश्रीनी एक कृति छे "अभिधान कोश" नो महान आदर्श नजर समक्ष राखी तेनी रचना शैली वगेरेने अनुसरवा पूर्वक आ "नाम माला" नी रचना करीने तेओश्रीए हस्तीरत्नना 'अभिधान कोश' नीज अस्मिता वधारी है

'सुशीलनाम माला' नामनो आ शब्दकोश अभ्यासीओ ने अनेक रीते उपयोगी थइ पडे तेम छे दरेक नूतन शब्द श्लोकादिनी शरुआतमा आवतो होवाथी कंठस्थ करनाराओने घणी सरलता करी आपे छे तथा शब्दार्थ समजवामा पण घणो सुगम थइ पडे तेवो छे

आ शब्दकोष तैयार करवामा आचार्य श्रीसुशीलसूरि महाराजे लीधेल सख्त परिश्रम गीर्वाण गिराना अभ्यासीओने आशिर्वाद रुप निवडवा संभव छे अभ्यासीओ तेनो लाभ उठावी श्रुतज्ञाननी वृद्धि करी स्वपर श्रेयने साधो एज एक शुभाभिलाषा

[प० पू० आ० श्रीमद्विजयरामचन्द्रसूरीश्वरजी म० सा० ना शिष्यरत्न पू० श्रीभद्रंकरविजयजी गणिवर्य म० श्रीनो आ अभिप्राय छे]

सं० २०३३
चैत्र वदि १०
बामणवाडजी तीर्थ
(राजस्थान)

भद्रंकरविजय

" सुशीलनाममाला "

(पू० पन्नयास श्री पद्मसागरजी गणिवर म० नो पत्र)

परम पूज्य विद्वद्वर्य आचार्यदेव श्रीमद्विजयसुशीलसूरीश्वरजी महाराज साहेबनी सेवामा सादर वदना सुखशाता.

आपनो कृपा पत्र मळ्यो. समाचार वधा जाण्या 'कलिकाल सर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्राचार्य' म० विरचित श्री अभिधानचिन्तामणि ' कोश नु आलबन लइ, बाल जीवोना उपकार माटे आपश्रीए 'सुशीलनाम माला' नूतन सस्कृत कोश तैयार कर्यो छे ते खूबज उपयोगी अने प्रशस्त कार्य आपे करेल छे

व्याकरणना सस्कृत साहित्यना आप जेवा उच्च कोटिना अभ्यासु श्रमण सस्थामा विद्वान् छो, ते गौरव समान छे अने तेथी आपना कार्यमा त्रुटि होवा कदाच सभावना नथी.

जे रीते आपे कोशने सरल, सुगम ने सुदर बनाव्यो छे, ते रीते आप लोक भोग्य थाय तेवो सुगम ने सरल अन्य ग्रन्थ आपो तेवी मारी विनति

आपश्रीनी आ विषयमा बौद्धिक प्रतिभा उच्च कोटिनी छे, तने आवा सुदर सरल भाषामा अपायेल साहित्यनो आस्वाद अनेक लइ शकशे

卐 श्रीवर्द्धमानस्वामिने नमः 卐

श्रीवीतरागपरमात्मशासनानुसारिविदुषां हि श्रमणप्रष्ठानां हृन्मानसेऽतीवान्तरानन्दलहरिपरिपूर्णताऽनुभूयमाना भवेत्प्रकृत सुशीलनाममालाख्यनव्यशब्दकोशोपलम्भेन ।

तत्त्वज्ञमुनीनां नैसर्गिकी हि तथाविध प्रवृत्तिर्येन स्वपरावबोधशक्तिविजृम्भण स्यात्, शब्दशास्त्र-न्यायशास्त्ररूपचक्रद्वयेन शास्त्र-विपिने विचरण तदैव सुखावहं भवेत्, यदा हि विविधार्थंगमकनानाशब्दव्रजपरिचायकशब्दकोशधुरि तस्य चक्रद्वयस्य यथायोगं सन्निवेश. स्यात्, विना हि शब्दकोशविज्ञानं कोशविहीननृपाल वत् ज्ञानसमृद्धिविलसित लब्धजन्म न भवेत्,

एतादृशे हि महत्त्वपूर्णे शब्दकोश साहित्ये, प्रयुज्यमानशब्दव्रजान् फल्गुप्रायान् निरस्योपयोगिशब्दव्रज मुखपाठसौकर्याय पद्यबंधेन विरचय्य याथार्थ्येन पूज्यवर्याचार्यपुंगवैं श्रीमद्भिः सुशीलसूरीश्वरैः स्वगुरुवर्यप्रस्थापितश्रमणवर्याध्ययनप्रागल्भ्यं वृद्धिङ्गतमकारोति सुजनानां महाभागानां विद्याविलासिनां भूयोभूयः धन्यवादार्हान् सूरिप्रतिष्ठान गुरुवर्योपाध्याय-तपस्विमूर्धन्य श्रीधर्मसागरजितां महाराजाना

आ० श्रीसुशीलसूरिजी महाराजे घणा परिश्रमे तैयार करेली 'सुशीलनाममाला' शब्दोना अभ्यासीओने सरलता करी आपे तेवी छे.

वि० सं० २०३३
चैत्र वदि १०
ब्राह्मणवाड़ा

मुनिराज श्रीभुवनविजयान्तेवासी
मुनिजंबूविजय

[स्व० प० पू० आ० श्रीमद्‌विजयसिद्धीसूरीश्वरजी म० सा० ना समुदायना समजवा.]

शुभ संदेश

परमपूज्य आचार्य भगवन्त श्रीसुशीलसूरिजी महाराज साहेबे कलिकाल सर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्राचार्य रचित अभिधान-चिन्तामणि कोषनुं आलबन लइने 'सुशीलनाममाला' नुं सरल संस्कृत भाषामां सर्जन करीने महान् सुकृत करेल छे।

मारु सद्भाग्य छे के-पू० श्री आचार्य भगवंतनु ज्यारे जोधपुरमां चातुर्मास हतु त्यारे तेज वरसे खरतर गच्छ उपाश्रय कुशलभुवनमां मारु चातुर्मास हतुं।

अने आ कारणे समय समय पर पू० आचार्य भगवत नो सहयोग दरेक शुभकार्यमा मळतो रह्यो।

आचार्य भगवतमा सरलता भद्रीकता निराभिमानपणुं तथा समन्वयता आदि अनेक गुणोने कारणे हुं तेओश्रीथी खूब प्रभावित बन्यो।

तेओश्री सघना महान् आचार्य होवा छतां पण तेओश्रीए मारा जेवा सामान्य साधु प्रत्ये पण जे आत्मियता राखी ते क्यारे पण भूली शकाय तेम नथी।

पूज्य आचार्य भगवतना चरणो वदन करीने शासनदेव प्रत्ये प्रार्थना करुं छु के आपश्री रचित आ 'सुशीलनाम माला' विद्वद् वर्गमां खूब व्यापक बने अने अनेक आत्माओ आ द्वारा ज्ञान उपार्जन करीने आत्म कल्याण करे, एज अभ्यर्थना।

श्री वीर सं० २५०३	लि० जयानन्दमुनि
विक्रम स० २०३३	ठि०-श्रीखरतर गच्छ उपाश्रय
कार्तिक शुद-३, सोमवार	लोढो का वास,
दिनाङ्क २५-१०-७६	पाली (राज०)

卐 卐

यह

'सुशीलनाममाला' ग्रन्थ के वारे में

सुप्रसिद्ध

जैनेतर पण्डितों की

सम्मतियें

卐 卐 卐

विशेष्यतो जैनागम सविदा साहित्यरत्नाद्यनेकोपाधिभाजा श्रीविजयसुशीलसूरिणा मनीषिणा विधाय परितो बहुशश्च परिश्रमान् वस्तुतो मुख्यतश्च विनेयानामन्येषां च सरलातिसरल दिशेव परमपुरुषार्थोपयोगी सुशीलसम्प्रयोजि केयमन्वयं नाम्नी 'सुशीलनाममाला' पुस्तकी विनिबद्धा, विख्यातमैथिलमनीषिणा पं० श्री सुरेशझा शर्मणा संशोधिता च, दृष्ट्वेमा दृढ विश्वसिमि यदियं झटित्येव स्वशक्त्या सत्प्रचार प्रसारणादिना बाढ फलिष्यति प्रार्थय चैतत्साफल्याय भगवन्त परमेश्वरम्, ग्रन्थनिर्मात्राऽत्र निर्माणे कियान् श्रमो व्यधायीति नातिरोहितमेतत् सुशीलनाममालां विपश्यतां विपश्चितामिति ।

जयपुर
दिनाङ्क
८-१०-७६

शुभेच्छोर्मे,
रघुनाथ मिश्रस्य
सम्मतिः
प्रधानाचार्य
राजकीय महाराजा आचार्य
संस्कृत महाविद्यालय
(जैन, संस्कृत सकाय, राजस्थान
विश्वविद्यालय जयपुर).

"पद्यामृतमयकोष , वृद्धिर्वैदुष्यवर्द्धक. ।
गुटिकेच सदा सेव्य., कण्ठस्थः सिद्ध निर्मित. ॥१॥
देवतादेवभाषाया, भासितो भास्करोपमः ।
विद्वत्सरसिवदता,पण्डितोक्ति व्यनक्ति च ॥ २॥
मुनिप्रवर्येण सुशीलनाम्ना,
सुनिर्मितेय च सुशीलमाला ।
हृद्यैर्जनैः स्वेहृदि सस्थितोय-
मानन्ददादुष्टजनर्तिदा च ॥ ३॥
श्रीकान्तठक्कुर इति प्रथितेन सम्यक्,
कोषान्तलोचनकृतात्र सुशीलमाला ।
तेनातिरम्य वचनेन सुधन्यवाद
विष्वक् प्रयच्छति मुदा सुमतिप्रसूनम् ॥ ४॥

जयपुर
दिनाङ्क
८-१०-७६

श्रीकान्त ठक्कुर
(ज्योतिषाचार्य, पोष्टाचार्य)
भू० पू० व्याख्याता, महाराजा
सस्कृत कॉलेज, जयपुर)

"स्वाभिप्रायान् परावबोधयितुं भाषाणामध्ययनेऽध्यापने च शब्दकोशानामतीवावश्यकता भवति । तदर्थमेव च अनेकं मनीषिभिर्ल्लिखिता. शब्दकोशाः । तेषु तेषु च कोशेषु विद्यते स्व स्व वैशिष्टचम्, परं यादृश वैशिष्टचमस्यां "सुशील-नाम्नमालायां" विद्यते तादृशं वैशिष्टय नान्येषु शब्दकोशेषु दृष्टिगोचरं भवति । अस्या अतीवसरलतया शब्दान्वेषणे अल्पमेधसामपि जनानामनतिश्रममात्रेणंवाल्पकाले स्वाभिष्टज्ञानानि भविष्यन्तीति सुनिश्चितमेव ।

अत्र पर्यायादिव्युत्पत्तिप्रदर्शनक्रमेण शब्दार्थाना ज्ञानं कारयितु विविधोपाया प्रदर्शिता सन्ति। यतोऽस्या नाममालाया यत्र तत्रातीव सरलतया क्लिष्ट शब्दाना व्युत्पत्तिरादिदृश्यते। स्वानुभवतर्कगहनाध्ययनपरिपाकमतया पूर्वापराचार्यसम्मत स्वीकृत्य भाषाविज्ञानदृष्टचापीयं सम्यगुपयोक्तृणां छात्राणा गुणैकपक्षपातिनां विदुषाञ्चातीव लाभकरी भविष्यतीति, आशा समान ।"

जोधपुरम्
दिनाङ्क
१६–१०–७६

जयनन्दनझा
संस्कृताध्यापकः
व्याकरणाचार्य-साहित्यरत्न-
शिक्षाशास्त्री,
सरदार उच्च माध्यमिक विद्यालयः

卐 卐 卐

अनुष्टुप छन्देषु सर्वबोधगम्यः विद्यते । 'वाक्य रसात्मक काव्य' अनुसारेण अयं ग्रन्थ विदुषान् करकमले आयाति ।

किं बहुना–'क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूप रमणीयतायाः' कृतित्व-सौन्दर्येण मम हृदये अमिट प्रभाव स्थापितः ।

कामये ग्रन्थोऽयं पाठकानां सुबहु उपकरिष्यति ।

जावाल	भवदीय
दिनाङ्क	जयन्तीलाल ओझा
१८-८-७६	एम. ए. बी. एड.
[जन्माष्टमी दिने]	जावालस्थ. ।

शब्दकोशोऽयम् हिमालयवत् उभयोः कोशयो' मानदण्ड करोति । यथा हिमालये भास्वन्ति रत्नानि महोषधिश्च तथैवा स्मिन् कोशेऽपि सुगमरूपेण शब्दाना वर्णनं दरिदृश्यते । तथैव कोशेऽस्मिन् शब्दा. रत्नानि इव प्रकाशन्ते । तथा च औषध्य' इव उपयोगिनः सन्ति । कोशोऽयं सुन्दरः उपादेयश्चास्तीति 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्'।

सिरोही
दिनाङ्क
२६-६-७६

भूरालाल शर्मा
(वेदान्त साहित्य शास्त्री
रा० उ० मा० विद्यालये
संस्कृताध्यापक)

वह

'सुशीलनाममाला' ग्रन्थ के बारे में

वकील-डॉक्टर-प्रोफेसर-विद्वान-

सेठी आदि की

सम्मतियाँ

"सुशीलनाममाला" ग्रन्थ का अवलोकन करने का अवसर प्राप्त हुआ। 'अनुष्टुप्' छंद का यह सस्कृत भाषा मे पर्यायवाची शब्द कोष एक अनुपम प्रयास है। भाषा के प्रगति के लिए शब्द कोष व उसमे भी पर्यायवाची शब्द संकलन एक विशिष्ट स्थान रखता है। इस नाममाला मे 'छः' विभाग रखे गए है और जो विभागीकरण विषय का किया गया है वह अनुमोदनीय है।

इसके उपरांत जो अनुक्रम रखा है वह सराहनीय है। (१) देवाधिदेव (२) देव (३) मर्त्य (४) तिर्यंग् (५) नरक (६) सामान्य विभागीकरण ग्रन्थकार महोदय के धार्मिक दृष्टिकोण का सूचक व प्रेरक है। शब्द संकलन में शब्द के यथार्थ अर्थ को सुरक्षित रखने का जो प्रयास किया गया है व साहित्यक दृष्टि से अनुकरणीय व प्रशसनीय है।

पू० आचार्य श्री विजयसुशीलसूरि महाराज साहेब ने संस्कृत साहित्य की इस ग्रन्थ द्वारा जो सेवा की है वह संस्कृत साहित्य के प्रति उनके आदर का द्योतक है।

भाषा के विद्वानों लेखकों व विद्यार्थिओ के लिए यह ग्रंथ उपयोगी सिद्ध हो यही मेरी कामना है।

सिरोही	पुखराज सिंघी एडवोकेट
दिनाङ्क	संयोजक
	राजस्थान जैन संघ व अध्यक्ष
१२-६-७६	सेठ कल्याणजी परमानंदजी पेढी

"सुशीलनाममाला" ग्रन्थ का अवलोकन करने का अवसर प्राप्त हुआ। 'अनुष्टुप्' छंद का यह सम्कृत भाषा मे पर्यायवाची शब्द कोष एक अनुपम प्रयास है। भाषा के प्रगति के लिए शब्द कोष व उसमे भी पर्यायवाची शब्द संकलन एक विशिष्ट स्थान रखता है। इस नाममाला मे 'छः' विभाग रखे गए है और जो विभागीकरण विषय का किया गया है वह अनुमोदनीय है।

इसके उपरांत जो अनुक्रम रखा है वह सराहनीय है। (१) देवाधिदेव (२) देव (३) मर्त्य (४) तिर्यंग् (५) नरक (६) सामान्य विभागीकरण ग्रन्थकार महोदय के धार्मिक दृष्टिकोण का सूचक व प्रेरक है। शब्द संकलन मे शब्द के यथार्थ अर्थ को सुरक्षित रखने का जो प्रयास किया गया है व साहित्यक दृष्टि से अनुकरणीय व प्रशसनीय है।

पू० आचार्य श्री विजयसुशीलसूरि महाराज साहेब ने संस्कृत साहित्य की इस ग्रन्थ द्वारा जो सेवा की है वह संस्कृत साहित्य के प्रति उनके आदर का द्योतक है।

भाषा के विद्वानों लेखकों व विद्यार्थिओ के लिए यह ग्रथ उपयोगी सिद्ध हो यही मेरी कामना है।

सिरोही

दिनाङ्क

१२-६-७६

पुखराज सिंघी एडवोकेट
संयोजक
राजस्थान जैन संघ व अध्यक्ष
सेठ कल्याणजी परमानदजी पेढी

अभिप्राय-

साहित्यरत्न, कविभूषण, शास्त्रविशारद पू० आचार्य देव श्रीविजयसुशीलसूरीश्वरजी म० श्री ताजेतरमां कलिकाल सर्वज्ञ पूज्य आचार्य भगवंत श्रीहेमचन्द्रसूरीश्वरजी म० रचित 'श्रीअभिधानचिन्तामणि' ने अवलं-अनुलक्षी, सरल भाषामां अने रोचक शैलिमां २८४८ श्लोक प्रमाण 'सुशीलनाममाला' नामनो एक नूतन संस्कृत कोश रची प्रकाशित करी रह्या छे.

पूज्य आचार्यश्रीना निकट सत्संगथी अने भाव वाही उपदेशथी तेओश्री एक विशिष्ट विद्वान्, प्रखर शास्त्राभ्यासी, सिद्धहस्त लेखक अने प्रभावक वक्ता छे एतो जाणुंज छुं.

तेओश्रीए आज पर्यंत न्हाना-म्होटा पुस्तकों-ग्रंथो रची वहोळा प्रमाणमां साहित्य-सर्जन कर्युं छे. जे सरल, रसप्रद अने मननीय होइ, सुंदर ने उत्साभर्यो आवकार पामेल छे. परन्तु आने हुं विशेष प्रभावित तो ए कारणे थयो के—

विद्वान् लेखक श्रीए स्वनामधन्य ग्रंथ-'सुशील-नाम-माला' रची प्रकाशित करी जिज्ञासु साहित्यकारो ने विद्वानों ने ऋणी बनाव्या छे. आवा अपूर्व ने अमूल्य ग्रथना सर्जन-प्रकाशन माटे पूज्य आचार्यदेव ने शतश. धन्यवाद साथे, वंदना करी, भविष्यमां पण नवनवुं सर्जन श्रीचतुर्विध संघने चरणे धरता पालीताणा (सौराष्ट्र) गुजरात रहे एवी नम्र विनंति सह विरमुं छुं.

श्री वीर सं० २४०३
विक्रम स० २०३३
पोश सुद १५
बुधवार
दिनाङ्क
४-६-७७

संघ-सेवक—
डॉ० भाइलाल एम० बावीशी.
एम. बी. बी. एस. (बोम्बे)
एफ. सी. जी पी. (इण्डिया)
प्रेसीडेन्ट-इन्डियन मेडीकल
एसोसिएशन, पालिताणा.

अभिमत

परम पूज्य आचार्यदेव श्रीविजयसुशीलसूरीश्वरजी म० सा० द्वारा विरचित 'सुशीलनाममाला' का अवलोकन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। २४४८ श्लोको का यह ग्रन्थ न केवल एक 'शब्द कोष' है अपितु एक 'ज्ञान कोष' भी है। इसके विभिन्न विभागों मे जैन साहित्य से संबधित अनेको पर्यायवाची शब्दो का उल्लेख है। ग्रन्थ मे जैनदर्शन की परपरानुसार तीर्थंकर, गणधर, यक्ष-यक्षिणी, गत चौविसी, वर्तमान चौविसी, देवलोक,मृत्युलोक आदि का विवरण ज्ञान से परिपूर्ण हे। ग्रन्थकार आचार्यप्रवर एक सिद्धहस्त लेखक है। साथ ही आप एक प्रखर व्याख्यानकार एव वक्ता भी है। आप के छोटे वड़े करीव ५६ ग्रन्थ अव तक प्रकाशित हो चुके हैं। वालब्रह्मचारी विद्वान् लेखक अपने निर्मल दीक्षा जीवन के ४५ वर्ष पूर्ण कर चुके हैं जिसमे आपने व्याकरण, न्याय, आगम आदि शास्त्र का अध्ययन किया हैं जिसका प्रति विम्ब आप द्वारा लिखित ग्रन्थो मे दिखाई पडता है।

गुजरात राज्य मे जन्मे लेखक की कर्मभूमि राजस्थान रही है जहां आपने अनेकों मदिरो का जिर्णोद्धार, प्रतिष्ठाएं, नूतन जिनालयो का निर्माण, छ'री पाल सघो का नेतृत्व

आदि अनेकों पावन पवित्र एव प्रशंसनीय कार्य करवाये हैं।

आप जैन धर्म के सिद्धान्तोनुसार एक सच्चे अर्थ मे साधु है। आप मे यथा नाम तथा गुण की कहावत चरितार्थ होती है। आपका सपूर्ण साधु जीवन त्याग-तपस्या, व ज्ञान-ध्यान से ओतप्रोत है। आप जैसे उत्कृष्ट कोटि के सुसाधुओ का राजस्थान मे विचरण जैनधर्म व समाज के लिये महान् उपकारी रहा है।

मेरा विश्वास है कि-विद्वान् लेखक द्वारा प्रकाशित 'सुशीलनाममाला' जैन दर्शन मे सस्कृत भाषा के ग्रन्थो का अध्ययन करने वाले प्रत्येक पाठक के लिये एक महत्त्वपूर्ण सदर्भ ग्रन्थ के रूप मे उपयोगी प्रमाणित होगी।

अत मे, मैं शासनदेव से लेखक के दीर्घजीवन की शुभ कामना करता हूं ताकि जैन शासन का यह देदिप्यमान सूर्य अपने प्रकाश द्वारा जैन जगत् को प्रकाशित करता रहे।

गांधी जयन्ति
दिनाङ्क
२-१०-७६

प्रोफेसर अमृतलाल गांधी
सिरोही वाले
(जोधपुर विश्वविद्यालय जोधपुर)
अध्यक्ष श्री भैरूबाग पार्श्वनाथ
जैन तीर्थ, जोधपुर (राजस्थान)

आज हमारा परम सौभाग्य है कि आप श्री जैसे विविध विद्या विशारद-विद्याव्यासगी-निस्वार्थ परोपकार परायण-सत्कर्तव्यनिष्ठ-लोकोपकार उपयोगी विद्याभ्यासी साहित्य सेवी ने समाज के लिए चिर स्मरणीय विविध साहित्य की सुयशस्वी रचना कर असाधारण उपकार किया है जिसका मूल्य आंका नही जा सकता। जिसमे विशेपकर साहित्य समुपासक सदा आपके ऋणि रहेगे।

"अभिधान चिंतामणी कोश" जिसमे १५४२ श्लोक ही है लेकिन आपने कई वर्षो की कठिन साधना के बाद २८४८ श्लोको वाले "सुशीलनाममाला" नामक ६ विभागो मे भाजित एक उपयोगी ग्रन्थ की रचना की है।

पूज्य आचार्यवर्यनें वाङ्मय के विविध विषयो का अवगाहन कर श्लोको के रूप मे रचे गये अमृतमय विशाल साहित्य का सृजन किया है। जिनने विद्यार्थियो, अभ्यासियो, जिज्ञासुओ एवं समाज के लिए एक महान् ज्ञान भडार प्राप्त होगा।

वास्तव मे आप श्री द्वारा रचा गया विद्वत्तापूर्ण ग्रन्थ "सुशीलनाममाला" संस्कृत प्रेमियो के लिए ज्योति स्वरूप होगा।

हमारा आपश्री के चरणो मे कोटि २ वदन स्वीकार होवे।

दिनाक १५-६-७६

विनीत सुगनचद जैन
B A, B Ed. (सा स्न)
राजकीय माध्यमिक विद्यालय,
नाडोल (पाली), राजस्थान

शासन सम्राट् प० पू० आचार्यदेव श्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वरजी महाराज साहेबे आ कालमा शास्त्रीय पठन पाठनने जे नाद आपणी साधु सस्थामा गाजतो कर्यो जेने लइ आगम-न्याय-व्याकरण-ज्योतिष-प्राकृत-अने साहित्य विगेरेमा प्रकाण्ड विद्वान् साधुवर्ग तेमना शिष्यो प्रशिष्यो अने बीजा समुदायो द्वारा शासन ने सापड्यो।

आ शास्त्रीय पठन-पाठनमा हमणा ओट आवी छे अने हालमा केटलोक साधुवर्ग दृष्टातो-टूचका-सुभाषितो अने आधुनिक लोकरुचिकर साहित्य तरफ वळवा मांडयो छे। ते काळमां पोताना दादा गुरु अने गुरुना शास्त्रीय वारसाये प० पू० आचार्य श्रीमद्विजयसुशीलसूरीश्वरजी महाराजे आ 'सुशीलन्यासमाला' बनावी सारीरीते साचवी राख्यो छे। तेनी प्रतीति करावी छे।

वर्तमानकाळमा व्याकरणना विषयमां प० पू० आचार्यदेव श्रीमद्विजयलावण्यसूरीश्वरजी महाराज अजोड विद्वान् हता। तेमणे तेमना जीवनकाळ दरमियान समग्र व्याकरणग्रथोना तलस्पर्शी अभ्यास उपरांत सात लाख श्लोक प्रमाण करता पण अधिक नूतन व्याकरणादि साहित्यनी रचना करी छे अने तेमना पट्टधर शिष्य-प्रशिष्य प० पू० आ० श्रीमद्विजयदक्ष-

सूरीश्वरजी महाराज अने प० पू० आ० श्रीमद्विजय सुशील-सूरीश्वरजी महाराजनी बांधव बेलडीए पोताना गुरुना पगले चाली गुरुनी प्रतिभाने जीवत राखी अनेकविध प्राचीन साहित्यने पल्लवित करेल छे।

प० पू० आ० श्रीमद्विजयसुशीलसूरीश्वरजी महाराजे पोताना प्रगुरु आचार्यदेव श्रीमद्विजय लावण्यसूरीश्वर महाराजना मरुस्थलना स्वर्गवास बाद, तेमणे तेमनो विहार राजस्थानमा ज राख्यो छे। अने त्यां रही अवार नवार विशिष्ट ग्रंथोनु संपादन करता आव्या छे। आ "सुशीलनाम्नमाला" ग्रंथनी रचना पण तेमणे राजस्थानना मरुधरदेशमा आवेल पाली शहेर मां वि० सं० २०२७ नी सालमां चातुर्मास रही पूर्णाहुति पूर्वक करी छे।

संस्कृत साहित्यना ग्रंथनी रचना करवी ते साहित्यना प्रकाण्ड विद्वत्ता विना संभवी शके नहि। आ ग्रन्थ तेमणे अनुष्टुप् छन्दमा रच्यो छे, अने तेना छ विभाग राख्या छे। पहेलो देवाधिदेवविभाग, बीजो देवविभाग, त्रीजो मर्त्यविभाग, चोथो तिर्यग् विभाग, पांचमो नारक विभाग अने छट्ठो सामान्यविभाग. छेल्ले एकाक्षर कोशमाला अने अन्ते सुशीलनाममालाना छ विभागना आपेला शब्दोनो अकारादि अनुक्रम आपेल छे।

संस्कृतना अभ्यासी माटे आ ग्रंथ उत्तम छे। संपादन शैलिपण श्रेष्ठ छे। पर्यायवाची शब्दोनो संग्रह सुंदर छे।

ग्रंथना अवलोकनथी ग्रन्थकर्त्तानी विशिष्ट विद्वत्ता अने संस्कृत भाषा उपरनो सुंदर काबु जणाया विना रहेतो नथी।

आ ग्रन्थ निर्माण द्वारा तेमणे अभ्यासको उपरना महान् उपकार साथे सूरिसम्राट्ना शिष्य-प्रशिष्योनी विशिष्ट विद्वत्ताना दर्शन साथे जैन शासननी अने विशेषे करीने साधु संस्थानी प्रतिभाने वधारी छे।

हुं इच्छुं छुं के आवा उत्तम ग्रन्थोनुं निर्माण करी जैन शासननी विशिष्ट कोटिनी विद्वत्ता द्वारा प्रभावना करे।

अमदावाद–७ दिनाङ्क १–११–७६	मफतलाल झवेरचन्द गांधी [जैन पंडित] ४ सिद्धार्थ सोसायटी, पालडी

* मन्तव्य *

न वि अत्थि न वि अ होही, सज्झाय सम तपो कम्म ॥
बृ० भा० ११६७

जैनधर्म दिवाकर| राजस्थान दीपक मरुधर देशोद्धारक शास्त्र-विशारद साहित्य-रत्नकवि भूषणादि भूषितोपाधि श्री श्री श्री १००८ श्रीमद् विजयसुशीलसूरीश्वरजी महाराज सा० द्वारा रचित 'सुशीलनाममाला' ग्रन्थ का अवलोकन करने का सुअवसर मिला, सम्पूर्ण ग्रन्थ अपने मौलिक स्वरूप मे अनूठा ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ शब्द कोष के रूप मे होते हुए भी जैन तत्व दर्शन, जैनागमो के सैद्धान्तिक विश्लेषण तथा जैन कथा साहित्य की परपराओ से सुसम्पन्न है।

विषय का प्रस्तुतीकरण सुबोध एव साहित्यिक रसानुभूति से युक्त होने से व्याकरण विषय की निरसता नहीं है तथा साधारण के लिये समझने योग्य है।

आपने इस ग्रन्थ को कोष के रूप मे प्रस्तुत करते हुए भी साहित्यिक एवं सांस्कृतिक इति वृतात्मकता से सटीक एव कलात्मक बनाया है जो इस पुस्तक की अपनी विशेषता है।

स्वाध्याय, मनन तथा तत्वचिंतन ऐसे महान् तप है जिनकी साधना से आगमाम्बुधि से अतीत के मुक्ता अन्वेषित कर साहित्य के कोष को समृद्ध बनाया जाता है। आचार्य श्री का प्रयास इस रूप मे वरदान तुल्य है।

वर्तमान भौत्तिक जीवन मे आगमो की ज्ञान-गगा जन मानस तक लाकर आध्यात्मिक उर्वरता प्रदान करने की अत्यन्त आवश्यकता है। इस प्रकार का भगीरथ प्रयास भौत्तिक जिजीविषा से मुक्त आचार्य, मुनि ही कर सकते है तथा भौत्तिक सुखो की मृगतृष्णा मे भटकते जीवो को शाश्वत् मोक्ष सुख प्रदान कर सकते है।

शिक्षा मोक्ष देने वाली हो। 'सा विद्या या विमुक्तये' आज की शिक्षा मुक्त रहने के लिये नही भौत्तिक बन्धनो का हेतु बन गई है।

सम्यक्-ज्ञान की अत्यन्त आवश्यकता है। समाज मे नैतिक एव चारित्रिक शुद्धता के विकास के लिये इस प्रकार की कृतियो प्रकाशस्तभ का कार्य करती है।

सम्यक्-दर्शन, सम्यक्-ज्ञान एव सम्यक्-चारित्र्य की रत्न त्रयी का त्रिवेणी सगम आध्यात्मिक एव मानसिक सतुष्टि प्रदान कर भव भव भटकते भविजन को कर्मो के पाश से मुक्त करा कर मोक्ष का पथिक बनाता है।

राष्ट्रीय चेतना में नैतिक एवं चारित्रिक विकास की अत्यन्त आवश्यकता है। इस प्रकार की रचनाएँ भगवान महावीर के उपदेशो एवं सिद्धान्तो को जीवन मे आचरण शुद्धि का क्रियात्मक कायाकल्प कराती है।

आज के परिवर्तित परिवेश मे एव राष्ट्रीय धारा के वदलते हुए स्वरूप मे यह ग्रन्थ मानव मात्र के लिये भद्रकर होगा तथा इस प्रकार के अन्य ग्रन्थो की रचनाएँ विश्व कल्याण की भावना को वढाने मे आशीर्वाद स्वरूप होगी।

ज्योतिष सदन
ऋषि पचमी गुरुवार
(भाद्रपद शु०)
विक्रम स० २०३५
दिनाङ्क ७-९-७८

प० हीरालाल शास्त्री एम० ए०
सस्कृताध्यापक
शासकीय विद्यालय
माण्डवला (जालोर)

'सुशीलनाममाला' पुस्तकना मुद्रित फरमाश्रो जोता (१) देवाधिदेव विभाग (२) देव विभाग (३) मर्त्य-विभाग (४) तिर्यग् विभाग (५) नारक विभाग अने (६) सामान्य विभाग, ए छ विभागमा विभाजीत करेल आ नाममालानु पुस्तक सस्कृत साहित्यना पठन-पाठनना अभ्यासीओने खूबज उपयोगी नीवडशे ।

वधुमां आ पुस्तकमां दर्शित 'अ' कारादि अनुक्रमथी दरेकनी शब्दनी माहीती तेना पर्यायवाचक नामो साथे सुलभ-तायी प्राप्त करी शकशे ।

आ पुस्तकना रचयिता परमशासनप्रभावक पूज्यपाद आचार्य भगवन्त श्रीमद्विजयसुशीलसूरीश्वरजी महाराज साहेब आगम-न्याय-व्याकरण आदि साहित्यना प्रकाड अभ्यासी उपरात तेओश्रीनो विचार, वाणी अने वर्त्तन स्वरूप जीवन व्यवहार अहिंसा-सयम अने तपथी अलकृत छे ।

पूज्यश्रीए स्वय करेल आ पुस्तकना समस्त श्लोकोना सर्जन उपरथी ज, तेओश्रीना सस्कृत भाषा उपरना काबुनो आपणने ख्याल पेदा थइ शके छे ।

तेओश्री छेल्ला केटलाक वर्षोथी राजस्थानमा ज विचरी रही अनेक स्थले शासन प्रभावनाना कार्यो करी रह्या छे ।

पूज्यश्रीनी शुभ निश्रामां राजस्थानमां अनेक स्थले अजन-शलाका-प्रतिष्ठादिनां शुभ कार्यो थतां ज रहेतां होवा छतां संस्कृत के तात्त्विक विषयना साहित्य सर्जनमां तेओश्री खूवज प्रवृत्तिशील बनी रहेता होइ विविध विषयी पुस्तकोनु सर्जन करी शक्या छे । पूज्यश्रीना रोमेरोममां प्रकाशी रहेल समता गुणे, राजस्थानना घणा गामोमा दीर्घकालीन क्लेशमय वाता-वरणने पण एकदम शांत बनावी अजनशलाका-प्रतिष्ठा आदिनां कार्यो निर्विघ्ने अने उत्साह पूर्ण वातावरणवाळा बनी जवा पाम्यां छे ।

शासन प्रभावनानां अने सकल संघना हितकार्योमा कया माणसपासेथी कइ रीते काम लेवु तेनी सुज, आ आचार्य भगवन्तमां अजोड छे ।

हमणा ज थयेल श्रीब्रामणवाडजी महातीर्थमा अजन-शलाका अने प्रतिष्ठानु कार्य ते प्रत्यक्ष पूरावा रुपे छे ।

पूज्यश्री दीर्घायु बनी रहो नवा नवा साहित्य सर्जनमा अने शासनप्रभावनाना विविध कार्योमां शासनदेव तेओश्रीने सहायभूत बनी रहे एज शुभेच्छा ।

श्री वीर स० २५०३ विक्रम स० २०३३ अषाढ शुक्ला त्रयोदशी दिनाङ्क २६-६-७७	ली० पुखचंद केशवलाल पारेख निवृत्त "धार्मिक शिक्षक" वाव (बनास कांठा) गुजरात

॥ श्रीस्थम्भनपार्श्वनाथाय नमः ॥

संस्कृतसाहित्यविषयकस्तुत्यपरिश्रमेणानेकविधग्रन्थ-रचनाकारि-पूज्यपादाचार्यभगवच्छ्रीमत्सुशीलसूरीश्वररचितेयं "सुशीलनाममाला"-कृतिः संस्कृत साहित्यविषये प्रगतिकारिका आबालविद्वद्भोग्या च भविष्यति ।

प्रतिशब्दमन्यरुपान्तरं दर्शयित्वाऽतीव सरलतरा सुभोग्या च कृता ।

कलिकालसर्वज्ञभगवता श्रीहेमचन्द्राचार्येण संस्कृतसाहित्या-तिविस्तृतप्राकाश्यमाने सहाय्यार्थं सारल्यार्थं च रचितं पञ्चानु-शासनान्तर्गतं शब्दानुशासने कृतेऽपि शब्दसिद्धित्वे संस्कृतकोशं जगति महदद्वितीयं च कार्यं कृतम् ।

संस्कृतसाहित्यजगति महाकोशं जगति च बालमुमुक्षु-जीवान् प्रवेशयितुं सरलतया ज्ञानं च लम्भयितुं कोशविषयक-स्तुत्यप्रयासकृच्छ्रीमन्त आचार्यवर्याः श्रीजिनशासनस्य महतीं सेवां कृतवन्तः ।

अतोऽस्माकं तेषां कोटाकोटिवन्दनसहितमभिनन्दनं घटते । इतिशम् ।

। जैनं जयति शासनम् ।

लिखितं-

केशरीचन्द्रात्मज छबीलदासेन श्रेष्ठिवर्यश्रीमत्‌केशवलाल बुलाखीदास-संचालित–श्रीभट्टीबाईस्याद्वादसंस्कृत प्राकृतपाठ-शाला-श्रीललिताबेनकेशवलाल स्वाध्यायमन्दिर प्रधानाध्याप-नेन वर्त्तमान स्तम्भतीर्थ (खम्भात) निवासिना वैक्रमीयत्रय-स्त्रिंशदधिकद्विसहस्रसंवत्सरे ।

[जैन पंडित श्रीछबीलदास केशरीचंदजी नो आ अभिप्राय छे]
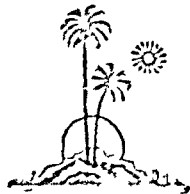
पू० आ० श्री विजयसुशीलसूरिजी म०, सादर वन्दना ।

आपने सस्कृत कोष वनाया जानकर खुशी हुई । आपकी साहित्य साधना निरंतर चल रही है, यह देखकर वडी प्रशनता होती है । साहित्य मे प्रवेश करने के लिये वहुत ही आवश्यकता होती है. अत आपने 'सुशीलनाममाला' सस्कृत कोष लिखकर सस्कृत के पाठको के लिये वहुत ही उपयोगी कार्य किया है ।

यह शीघ्र प्रकाशित हो अधिकाधिक प्रचार हो यही शुभ कामना है ।

वीकानेर दिनाङ्क १८-९-७६	अगरचन्द नाहटा [जैन पडित]

अभिप्राय

"सुशीलनाममाला" ना छपाता फारम जोया. कलिकाल-सर्वज्ञ आचार्य श्रीहेमचन्द्रसूरीश्वरजी म० ना "अभिधान चिन्तामणी" कोशना आधारे रचायेली आ नाममालामा अनेक शब्दोनो सग्रह करेलो होवाथी विस्तृत बनी छे, अना तेनी रचनामा प्रासाद गुण अने सरलता होवाथी विद्यार्थीने कठस्थ करवानी साहजिकतानो अनुभव थशे आमा लिगोनो निर्देश साथे साथे होत तो ते वधु अनुकूल बनत आचार्य विजयसुशीलसूरि म० नी अनेक विषयोनी रचनामां आ कृति भात पाडे एवी छे.

कात्तिकी पूर्णिमा
६/बी, वीरनगर सोसायटी
नवावाडज अमदावाद-१३
दिनाङ्क ६-११-७६

अम्बालाल प्रेमचन्द शाह
[जैन पंडित]

परम पूज्य कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य भगवन्त श्री हेमचन्द्र-सूरीश्वरजी म० कृत श्री 'अभिधान चिंतामणि कोश' ना आधारे पू० आचार्यदेव श्री सुशीलसूरिश्वरजी महाराज साहेबे 'सुशीलनाममाला' (सस्कृत शब्दकोश) अनुष्टुप् छन्दमा २८४८ श्लोक प्रमाण बनावी सस्कृत साहित्यना अभ्यासीओ उपर महान् उपकार करेल छे

आजे ज्यारे सस्कृत साहित्य तरफ लोकोनु ध्यान सविशेष खेंचायेल छे, त्यारे आवा ग्रन्थो ते साहित्यना अभ्यासीयोने वधु उपकारक थशे.

पूज्यपाद आचार्यदेवश्रीनो आ प्रयास अभिस्तुत्य छे

पालिताणा	लि कपुरचद रणछोडदास वारैया
दिनाङ्क	तथा अध्यापक श्री जैन [श्रेयस्कर मडळ]
२७-८-७६	सोमचद डी० शाह
	सपादक-'सुघोषा' मासिक

卐 卐 卐

जैन धर्म दिवाकर-राजस्थान दीपक-मरुधरदेशोद्धारक-शास्त्र विशारद परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद्विजय-सुशीलसूरीश्वरजी महाराज साहब की स्वरचित 'श्रीसुशीलनाममाला' की कृति अतीव सुन्दर, प्रशंसनीय, आदरणीय एवं अभ्यासनीय है।

शिवगंज
दिनाङ्क
१८-८-७६

लि०
'श्री वर्द्धमान जैन तत्त्वज्ञान प्रचारक विद्यालय श्री शिवगंज' के प्रधानाध्यापक एवं मैनेजर
शा० भूरमल वीरचन्दजी प्राग्वाट जैन लामवाला

पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजयसुशीलसूरीश्वरजी महाराज साहेब आदि ठाणानी पवित्र चरण कमलमां श्रीजावाल

आपश्रीए तैयार करेल 'सुशीलनाममाला' ग्रथ संस्कृतना अभ्यासीयोने उपयोगी छे आपश्रीनो परिश्रम स्तुत्य छे. एज

सभ्य
श्री. सोना
कोटीशत. वदणा
अवधारशोजी

[श्रीमद् यशोविजयजी जैन सस्कृत पाठशाला
अने
श्री जैन श्रेयस्कर मडल–महेसाणा.]
दिनांक २–१०–१९७६

जैन धर्म दिवाकर-राजस्थान दीपक-मरुधरदेशोद्धारक-शास्त्र विशारद परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद्विजय-सुशीलसूरीश्वरजी महाराज साहब की स्वरचित 'श्रीसुशीलनाममाला' की कृति अतीव सुन्दर, प्रशसनीय, आदरणीय एव अस्यासनीय है।

शिवगज	लि०
दिनाङ्क	'श्री वर्द्धमान जैन तत्त्वज्ञान प्रचारक विद्यालय श्री शिवगज'
१४-८-७६	के प्रधानाध्यापक एव मैनेजर शा० भूरमल वीरचन्दजी प्राग्वाट जैन लासवाला

पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजयसुशीलसूरीश्वरजी महाराज साहेब आदि ठाणानी पवित्र चरण कमलमां भीजावाल

आपश्रीए तैयार करेल 'सुशीलनाममाला' ग्रंथ संस्कृतना अभ्यासीयोने उपयोगी छे आपश्रीनो परिश्रम स्तुत्य छे. एज

सभ्य
श्री. सोना
कोटीशतः वंदणा
अवधारशोजी

[श्रीमद् यशोविजयजी जैन संस्कृत पाठशाला.
अने
श्री जैन श्रेयस्कर मंडल-महेसाणा.]
दिनांक २-१०-१९७९

प्राचीन कालमा परमपूज्य प्रात स्मरणीय कलि काल सर्वज्ञ आचार्यदेव श्रीमद्‌विजय हेमचन्द्रसूरीश्वरजी महाराज साहेबे रचेल 'श्री अभिधान चिन्तामणी कोशना' आधारे बाल ब्रह्मचारी राजस्थान दीपक परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय सुशीलसूरीश्वरजी महाराज साहेबे बनायेल 'श्रीसुशीलनाममाला' संस्कृतना अभ्यासीओने घणोज उपयोगी छे आपश्रीजीनो प्रयास घणोज प्रशंसनीय छे तेनो घणोज प्रचार थाय एवी अंतिम भावना।

लि०

मास्टर बाबुलाल मणिलाल संघवी
भाभरवाले हाल तखतगढ
राजस्थान (मारवाड)
दिनांक १०-१-७६

विश्वविख्यात परम पूज्य कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेम-चन्द्राचार्य महाराज श्री ने सदीयो पहले रचा हुआ महा ग्रथ 'श्रीअभिधानचिन्तामणि' कोश का आलबन लेकर आपने यह 'सुशीलनाममाला' नामक ग्रन्थ की सुंदर रचना करके आम जनता के सामने साहित्य सेवा का उदाहरण प्रस्तुत किया है यह बहुत ही प्रशंसनीय और अनुमोदनीय है।

यह ग्रथ जैसे सस्कृत पढने वाले बालको के लिए उपयोगी है उसी प्रकार विद्वानो-बुद्धिमानो के लिए भी अति उपयोगी है। इसी प्रकार पुस्तक का यह कोष कॉलेज मे पढाया जा सकता है।

आपने अनेक ग्रन्थो का सर्जन करके समाज पर बहुत बडा उपकार किया है।

आपकी अजोड साहित्य सेवा और शात स्वभाव दोनो मिलकर पुन अनेक ग्रथ के निर्माण भविष्य मे भी कर सकेगे।

आप पूज्य गुरुदेव से विनति है कि समय २ पर ऐसी साहित्य सेवा करके जगत का उपकार करे। आप श्री को सदेव मेरा कोटि कोटिश' वन्दन हो।

सिरोही, राजस्थान
दिनाङ्क
२२-१०-७६

लि०
आपका चरणोपासक विधिकारक
मनोजकुमार बाबुलालजी हरण
(बी० कॉम०)

A bunch of flowers :

I was thrilled to go through the great book **'Susheel Nam Mala'** containing about 3000 slokas *written by His Holiness Acharya Shrimad Vijay Sushil* Surishwarji Maharaj

The Acharya Shree has written one hundred and eight books out of which fifty six books have been published and the remaining await publication

The Acharya Shree s style is lucid and comprehensive which like nectar enters the soul resulting in the transformation of mind body and soul Every *theme is depicted in such a simplicity that the reader* feels as if he is in the wonderland of illumination such is the magic of his style. His books dealing with all the aspects of the Jainism have become very popular among the elite as well as the common people belonging to all faiths, caste and creed

The Acharya Shri was born in 1973 V S in Chansma village of the greater Gujarat Province in a well known Visa Shrimali family of the Chauhan Gotra

His father Mehta Chaturbhai was a religions man and his mother Smt Chanchal Bahen was a devout lady. His grand father Mehta Tarachandji led a very pious life His elder brother Dalpatbhai renounced this world and is well known as Acharya Shrimad Vijay Daksha - Surishwarji Maharaj The Acharya Shree s younger sister was also deeply religions The younger Sister Tarabahen also renounced this world and is well known as Ravindu Prabha-Shriji The religions trend of this family left an indelible impression of piety and divimity upon Acharya Shree Vijay Sushil Surishwarji Maharaj The great teachers like Acharya Smrat Shrimad Vijay Nemisurishwarji Maharaj and Acharya Shimad Lavanya Surishwarji Maharaj inspired him in his boy-hood to renounce this world at the age of 15 in the year 1988 V S

After the renunciation the Acharya Shree devoted himself fully to learning at the holy feet of Acharya Smart Shrimad Vijay Nemisurishwarji Maharaj and Acharya Shrimad Lavanya Surishwarji Maharaj He not only studie Jain scriptures under their guidance but a'so acquired a deep knowledge of the Shad Darshanas

Achaya Shri Vijay Susheel Surishwarji though born in Gujarat, has been moving barefooted in the villages, towns and cities of Rajasthan for the last thirteen years benefitting people by his sermons and inspiring them to lead pious life and perform good deeds for the welfare of the people and the Society

He has been decorated with titles such as 'Shastra Visharad - well versed in Jain Scriptures Sahitya Ratna - the jewel of literature and Kavi' Bhushan' - the ornament of the poets In the holy Jaisalmer Tirtha Shri Sangh confirmed on him the title of Jain Dharma Diwakar - the Sun of the Jainism Besides he was awarded 'Marudhar - Desho-dhara' on the auspicious Pratishtha ceremony at Rani Station 'Tirtha Prabhavak' at Chanwaleshwar Tirtha Rajasthan Deepak -The lamp of Rajasthan in Pali Shasan Ratna - The jewel of Jain Society in Jodhpur

In the sacred Memory of Lord Mahavir Acharya Shree [illegible] the following temples and monuments constructed

1 The Siddha Chakra Mandir at Nadol

2 Pavapuri Jal Mandir at Nadol

3 Laghu Shanti–the sacred poem composed by the great Acharyadev Shrimad Mandev Suri was carved in marble-stones at Nadol The life sketch of the great composer has also been carved in marble in the temple

4 Samavasaran Mandir in Jodhpur.

5 Pavapuri Temple at Khimel

6 Kirti Stambh at Jawal

Acharya Shrimad Vijay Susheel Surishwarji Maharaj has inspired Shree Sangh to open Religious schools at varions places such as Nadol Ramsin Khimel Jodhpur Udaipur etc It is his firm belief that the transformation of society depends upon education especially education in Religion

Many holy pilgrimages tool place at the inspiration of the Acharya Shree Eleven Chhari Pal Sangh were led by the Acharya Among them the following are worthy of mention

with great enthusiasm, in the year 2033, Owing to this ceremony the Sangh enjoyed all sorts of happiness

I bow to the Sacred feet of Acharya Shri Vijay Sushilsuriswarji Maharaja, who is like a Tree of Heaven on this earth

FALNA

Samvat 2033, Ashadh Sukla Panchami

Wednessday,

(22-6-77)

J. C. Patni

M A (English & Hindi)

Vice Principal,

S.P.U. College Falna

श्रीसुशीलनाममाला अंगे अभिप्राय-

विद्वद्वर आचार्य श्रीविजयसुशीलसूरिजी म०
जोग अनुवन्दना सुखशाता.

तमे 'सुशीलनाममाला' नामनो संस्कृत शब्द-कोष तैयार कर्यो छे ते जाणी खूब आनंद थयो छे

संस्कृत ग्रन्थो वांचवामा अने नवीन ग्रन्थ रचवामा कोष ए घणुं उपयोगी साधन छे. कोष वगर जेम राजा शोभतो नथी तेम विद्वान् पण कोष वगर शोभतो नथी

तमारो प्रयास प्रशंसनीय छे बीजी पण आवी मौलिक कृतिओ तमारा हाथे तैयार थाय एवी अभिलाषा साथे—

वि० सं० २०३२
मागशर सुद ६

विजयदेवसूरि
पालिताणा

卐 卐 卐

श्रीसुशीलनाममालायाः- अभिप्रायः।

श्रीमत्-सुशील-महनीय बुधेश्वराणा,
भव्योपकारभर-निर्भर तत्पराणाम् ।
पादारविन्दविगलन्मकरन्दवृन्द,
मद्वन्दनात्मकमिलिन्द उपैत्वमन्दम् ॥ १ ॥

श्रीमत्कराम्बुजचिनि मृतपत्रमेत्य,
हर्षप्रकर्षमिह मन्तनुते नितान्तम् ।
स्वान्ते ममाऽस्ति कुशल भवदीयमिप्मो.,
श्रीमत्प्रसादमनिश मनसाऽभिलिप्मो. ॥ २ ॥

य श्रीमता मतिमता रचितोऽस्ति कोपो,
वंदुष्यलक्षणमहार्थ भटाधिपोप· ।
एतत्कृते मतिमते भवते ददामि,
धन्य ध्वनि स्वरवनि प्रतिपद्यमानम् ॥ ३ ॥

कोव विना न लमतीह तथा विपश्चित्,
लोके यथा नरपतित्वमितोऽपिकश्चित् ।
तस्मात् सुधीजन ममाज उदारभाव,
दृष्ट्वा प्रसीदतितरा मतिमत्सु सत्सु ॥ ४ ॥

साहित्य सद्म-दृढयन्त्रविमोचि कुञ्ची,
गूढार्थबोधविहिताऽऽदरलोकरञ्जी ।
श्रीमन्मुखाम्बुजविनिर्गत नाममाला,
मालायते हृदि न कस्य गुणै विशाला ॥ ५ ॥

वि० स० २०३३ मार्गमित षष्ठी

उपाध्याय हेमचन्द्रविजयो मणि
पादलिप्तपुरम्